"वर्तमान शासन-नायक, प्रभु महावीराय नमः"
"श्री ज्ञान-वल्लभ, गुप्ति पुष्पांक"

सप्त स्मरणादि सूत्रम्

प्रकाशक-
"श्री ज्ञान, वल्लभ, गुप्ति मंडल"
(धर्म स्नेही, महिलाओ की ओर से)

उपदेशिका-
"शासन दीपिका मनोहरश्री जी म."

मुद्रक -
हजारे प्रिन्टर्स,
मेघ मार्केट, सिटी कोतवाली, रायपुर.

विक्रम सवत्-२०३४ प्रथमावृति
वीर सवत्-२५०४ प्रतिया २०००

नोट.-स्वच्छ रखो पुस्तक वसन, देह, गेह, अरु, द्वार।
मैला पन ही बुरा, सब रोगों का भंडार।
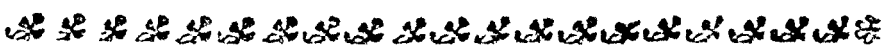
परम पूज्या शासन दीपिका साध्वी जी श्री मनोहर श्री जी महाराज सा. के समय समय पर अपने वचनामृत द्वारा जैन शास्त्रों का अमूल्य प्रवाह जो बहाया है उसी को संग्रहीत कर इस पुस्तिका के रूप से पाठकों के सामने रखा गया है।

आशा ही नहीं मुझे पूरी उम्मीद है कि इस पुस्तक का पूरा पठन एवं मनन किया गया तो इस भव बंधन से मुक्ति पाने का मार्ग बड़े ही सरलता से पाठकों के समझ में आ सकेगा और इसको अपने आचरण में लाने से इस भव बंधन से मुक्ति पाने व पूर्ण सुख प्राप्त करने में इससे पुरी सहायता मिलेगी इस लिए पाठकों से मेरा अनुरोध है कि इस पुस्तक का पूरा पठन करें मनन करें और वैसा आचरण करें ॐ शांति ॐ शांति ॐ शांति।

प्रेस कर्मचारियों की गलत समझ के कारण शब्दों में कहीं त्रुटियां रह गई है जिसके लिए मुझे खेद है पाठक अपनी बुध्दि से या गुरुगम से समझने की कोशिश करें।

मेघराज बेगानी
मेघ मारकेट, रायपुर
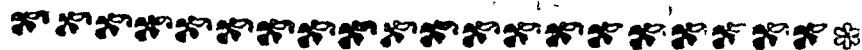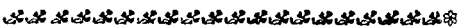
परम पूज्या विव्दत् शिरोमणि मनोहर श्री जी म सा आदि ठाणा समस्त की सम्यग प्रेरणा से महासमुन्द दुर्ग, रायपुर, धमतरी, जगदलपुर, भिलाई, कुटेलो,पडरिया,खडगपुर एव जबलपुर के धर्मानुरागी महानुभावों एव महिला मडल व्दारा ज्ञान–पूजन एव गुरु पूजन के द्रव्य का सदुपयोग कर यह पुस्तिका प्रकाशित की गई है।

धर्म-ग्रन्थ की प्रतिया जिनने,बहुत द्रव्य व्यय करके।
जनता के हाथो पहुचाई , परिश्रम सह करके ॥

वीर सवत् –
२५०४
विक्रम सवत्
२०३४

विनीत :–
श्री महाकोशल जैन श्वेताम्बर
मूर्तिपूजक सघ
(म प्र)

"सप्तस्मरणादि सूत्रम्" प्राप्ति स्थान

१ आदिनाथ जैन श्वेताम्बर मदिर
दुर्ग (म. प्र)

२. श्वे जैन मदिर
महासमुद
रायपुर म.प्र

विषय-सूची

समर्पण

में नाही जानू भक्ति की रीति,
क्या गाऊंगी तेरे गीत रे।
ना कोई अर्चन, ना समर्पन,
सूना है जीवन संगीत रे।

मम हृदय नायिका ! स्व पू. ज्ञान श्री जी म.सा स्व. पू प्र बल्लभ श्री जी म. सा एव स्व पू गुप्ति श्री जी म सा के महान् गुण रश्मिओ के प्रति मन की सच्ची पुकार, आत्मिक तादात्म्य व हृदय से निसृत माधुर्यभाव रह-रह कर समर्पित होने को चाह रहा है।

भक्त, गुरूचरण नलिनो में स्नेह सुमनो के अतिरिक्त और अर्पण भी क्या कर सकता हे ? यही भक्ति का सच्चा और पवित्र नैवेद्य है।

हे उपासिके ! हृदयाकाश मे आपके Accomplishment-Rocket (गुण-प्रकाश) की जगमगाती ज्योत्सना मेरे Abysmal अज्ञान-तिमिर को दूर करके मुझे Novel प्रभा से प्रभासित की है ।

आपकी इस सरलता मे एक सजीवनी शक्ति है

जो कि जिज्ञासु व पिपासु इस अबोध हृदय को बोध दे जाती है एवं गुरू-चरणों में समर्पण की अभीप्सा को जागृत कर जाती है।

आप श्री की निखरती करूणा के कारण ही यह कार्य संपन्न हुआ है, अतः प्रेमभरी आपश्री की करूणा को वंदना !

आपकी स्नेह-लता जैसी करूणा ने सुप्त ऐसे मेरे हृदय को जागृत किया।

मुझे यह अर्घ्य किसे अर्पण करना ?

मुझे यह आपकी करूणा ने दिया है। मैं आपकी करूणा को समर्पित करती हूं।

अंतत मैं धन्य हूं कि मुझे भवदीय पद-पद्मों में स्नेह उपहार अर्पण करने सुनहला अवसर प्राप्त हुआ।

गुरूदेव के प्रति मेरे हृदय दीपक में स्नेह-तेल सदैव बना रहेगा ! ऐसी मेरी मंजुल भावना है।

समर्पित—

आपकी ही अपनी

साध्वी मनोहरश्री

प्रस्तावना

Devotion is an interview with God.

"भक्ति" प्रभु के साथ एक मुलाकात है।

हर एक आस्तिक समाज के लिए Piety (प्रभु-भक्ति) से बढ़कर और किसी प्रकार का विशिष्ट उपादेय साधन विश्व में नहीं है।

ईश्वर भक्ति के अनेक उपायो में अनेक विविध गुणो का स्तुति व स्तोत्रों द्वारा स्मरण एक मुख्य और अमोघ उपाय है। जो मानव नित्य प्रति सुबह शाम Regular प्रभु स्मरण एकाग्रचित्त से अंतःकरण पूर्वक करता है, उसका जीवन आनंदमय व्यतीत होता है।

जैसे कल्पवृक्ष में मनोइच्छित सभी वस्तुएं निहित है किन्तु एक भी दृष्टि गोचर नहीं होती, चूंकि उसकी छाया में बैठकर वाछित चीज की स्पृहा मात्र से वह फौरन मिलती है। उसी प्रकार भगवत स्मरण में बेहतरीन शक्ति समाई हुई है भले वह दर्शित न हो, उससे सब मनोरथ Sucses (सफल) हो सकते है

स्तोत्र स्मरण का बल अपूर्व है। एक चिनगारी लाखो मन कपास को भस्म कर देती है उसी प्रकार

सच्चे हृदय से किया गया स्मरण दुख, चिंता, व्याधी एवं दुष्ट-विचारों को भस्म कर देती है।

सुखी जीवन तथा आत्म शांति के लिए स्मरण एक अमूल्य रत्न है। यही Reason (प्रयोजन) है कि हमारे परम आस्तिक जैन आम्नाय के अनेक धुरंधर आचार्यों ने विविध भाषाओं में असंख्य स्तुति स्तोत्रों की रचना कर स्वयं भगवद्-भक्ति का अतुल लाभ प्राप्त कर अन्य जीवों के लिए भी उसका मार्ग सरल कर दिया है। प्रस्तुत प्रकाशन इसी प्रयत्न का परिणाम है।

वपु-सुरक्षा के लियें अन्न आवश्यक है, वैसे ही आत्मिक संरक्षण हेतु Continues (नियमानुसार) सप्त स्मरण स्तोत्रादि का वांचन निहायत जरूरी है।

मुझे प्रत्येक प्रभु स्नेहियों से पूर्ण यकीन है वे इस पुस्तिका का बड़ी सुरक्षा व सावधानी के साथ लाभ उठावेंगे।

इन्हीं स्वर्णिम आकांक्षाओं के साथ–

। ॐ अर्हम् ।

लि. साध्वी मनोहरश्री

卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐

श्री वीतरागाय नमः

(आध्यात्मिक) धार्मिक

नित्य स्मरण पाठ माला

"माङ्गलिक स्तोत्राणि"

नमोक्कार मंत्र

णमो अरिहंताणं। णमो सिद्धाणं। णमो आयरियाणं।
णमो उवज्झायाणं। णमो लोए सव्वसाहूणं।
एसो पंच णमुक्कारो। सव्वपावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं। पढमं हवइ मंगलं ॥१॥

卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐

卐 卐

अथ मांगलिक सप्त स्मरणानि ।

(१) प्रथम श्रीबृहदजितशान्तिस्मरणम् ।

अजिअं जिअसव्वभयं, संतिं च पसंतसव्वगयपावं। जय गुरु संतिगुणकरे, दो वि जिणवरे पणिवयामि ॥१॥ (गाहा) ववगयमंगुलभावे, ते हं विउलतवनिम्मलसहावे। निरुवममहप्पभावे, थोसामि सुदिट्ठसब्भावे ॥२॥ (गाहा) सव्वदुक्खप्पसंतिणं, सव्वपावप्पसंतिणं । सया अजि-असंतीणं, नमो अजिअसंतिणं ॥३॥ (सिलोगो) ॥ अजिय जिणसुहप्पवत्तणं तव पुरिसुत्तम नामकित्तणं। तह य धिइमइप्पवत्तणं, तव य जिणुत्तम संति कित्तणं ॥४॥ (मागहिआ) ॥ किरिआविहिसंचिअकम्मकिले-सविमुक्खयरं, अजिअं निचिअं च गुणेहिं महामुणिसि-द्धिगयं। अजिअस्स य संति महामुणिणो वि अ संतिकरं, सययं मम निव्वुइकारणयं च नमंसणयं ॥५॥ (आलिंगणयं)॥ पुरिसा जइ दुक्खवारणं, जइ अ विम-ग्गह सुक्खकारणं। अजिअं संतिं च भावओ, अभयकरे सरणं पवज्जहा ॥६॥ (मागहिआ)॥ अरइरइतिमिरवि-

卐 卐

रहिअमुवरयजरमरण, सुर असुर गरुलभुयगवइपययप-णिवइअ। अजिअमहमवि अ सुनयनयनिउणमभयकर, सरणमुवसरिअ भुविदिविजमहिअ सययमुवण मे ॥७॥ (सागयं) ॥ तं च जिणुत्तममुत्तमनित्तमसत्तधरं, अज्जवमद्दवखंतिविमुत्तिसमाहिनिहिं। संतिकर पणमामि दमुत्तमतित्थयरं, संतिमुणी मम संतिसमाहिवर दिसउ ॥ ८ ॥ (सोवाणयं) ॥ सावत्थिपुव्वपत्थिवं च वरहत्थिमत्थयपसत्थवित्थिन्नसंथिअं, थिरसरिच्छवच्छ मयगललीलायमाणवरगंधहत्थिपत्थाणपत्थियं संथवारिहं। हत्थिहत्थबाहुं धंतकणगरुअगनिरुवहयपिंजर पवरलक्खणोवचिअसोमचारुरूवं, सुइसुहमणाभिराम-परमरमणिज्जवरदेवदुंदुहिनिनायमहुरयरसुहगिर ॥९॥ (वेड्ढओ)॥ अजिअं जिआरिगणं, जिअसव्वभयं भवो-हरिउं। पणमामि अहं पयओ, पावं पसमेउ मे भयवं ॥ १० ॥ (रासालुद्धओ) ॥ कुरुजणवयहत्थिणाउरनरीसरो पढमं तओ महाचक्कवट्टिभोए महप्पभावो, जो बावत्तरिपुरवरसहस्सवरनगरनिगमजणवयवई, बत्तीसारायवरसहस्साणुआयमग्गो। चउदसवररयणनवमहानिहिचउसट्ठिसहस्सपवर जुवईण सुन्दरवई, चुलसी-

हयगयरहसयसहस्ससामी, छण्णवइगामकोडिसामी आसिज्जो भारहंमि, भयवं ॥११॥ (वेड्ढओ) ॥ तं संतिं, संतिकरं, संतिण्णं सव्वभया। संतिं थुणामि जिणं संतिं विहेउ मे ॥१२॥ (रासानंदियं)। इक्खाग-विदेहनरीसर नरवसहा मुणिवसहा। नवसारयससि-सकलाणण, विगयतमा विहुअरया। अजि उत्तम तेअ-गुणेहिं, महामुणिअमिअबला विउलकुला। पणमामि ते भवभयमूरण जगसरणा मम सरणं ॥१३॥ (चित्त-लेहा)। देवदाणविंदचंदसूरवंद! हट्ठ तुट्ठजिट्ठपरम, लट्ठरूव धंतरुप्प पट्टसेअ-सुद्ध-निद्ध-धवल। दंतपंति संति सत्तिकित्तिमुत्तिजुत्तिगुत्तिपवर, दित्ततेअवंदधेअ! सव्वलोअ भाविअप्पभावणेअ पइस मे समाहिं ॥१४॥ (नारायओ)॥ विमलससिकलाइरेअसोमं, वितिमिर-सूरकराइरेअतेअं। तिअसवइगणाइरेअरूवं, धरणिधर-प्पवराइरेअसारं ॥१५॥ (कुसुमलया)॥ सत्ते अ सया अजिअं, सारीरे अ बले अजिअं। तवसंजमे अ अजिअं, एस थुणामि जिणं अजिअं ॥१६॥ (भुअगपरिरंगिअं) सोमगुणेहिं पावइ न तं नवसरयससी, तेअगुणेहिं पावइ न तं नवसरयरवी। रूवगुणेहिं पावइ न तं

卐 卐

तिअस-गण-वई, सार-गुणेहिं पावई न त धरणि-धर-
वई ॥ १७ ॥ (खिज्जिअय) तित्थ-वर-पवत्तय तम-
रय-रहिअ । धीर-जण-थुअच्चिअं चुअकलिकलुस ॥
संति-सुह-प्पवत्तय ति-गरण-पयओ । संतिमहं महा-
मुणिं सरणमुवणमे ॥ १८ ॥ (ललिअयं) विणओणय-
सिरि-रइअजली-रिसिगण-सथुअ थिमिअ । विबुहा-
हिव-धणवइ-नरवइ-थुअ-महिअच्चिय वहुसो ॥ अइ-
रुग्गय-सरय-दिवायर-समहिअ-सप्पभ तवसा । गय-
णगणविअरण-समुइय-चारण-वंदिअ-सिरसा ॥१९॥
(किसलयमाला) असुर-गरुल-परिवंदिअ । किन्नरो-
रगणमसिअ ॥ देव-कोडि-सय-सथुअ । समग-सघ-
परिवंदिअ ॥ २० ॥ (सुमुह) अभय अणह । अरयं
अरुय । अजिअ अजिअ । पयओ पणमे ॥ २१ ॥
(विज्जुविलसिय) आगया वरविमाण-दिव्व-कणग-
रह-तुरय-पहकर सएहिं हुलिअ ॥ ससभमोअरण-
खुभिअ-लुभिअ-चल कुण्डलगप्रतिरोड-सोहंत-मउलि
माला ॥२२॥ (वेड्ढओ) ज सुर-सघा सासुर सघा
वेर दिउत्ता, भत्ति सुजुत्ता ! आयर भुसिअसंभम पिंडिअ
सुट्ठु सुविम्हिय सव्व वलोघा ॥ उत्तम कंचण रयण

卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐

卐 卐

परुविअ भासुर भूसण–भासुरिअंगा। गाय समोणय भत्तिवसागय पंजलि पेसिअ सीस पणामा ॥ २३ ॥ (रयणमाला) वंदिऊण थोऊण तो जिणं। तिगुणमेव य पुणो पयाहिणं॥ पणामि ऊण य जिणं सुरासुरा। पमुइआ सभवणाइं तो गया॥ २४ ॥ (खित्तियं) तं महामुणिमहंपि पंजलि। राग दोष भय मोह वज्जिअं॥ देव दाणवर्नारिद वंदिअं। संति मुत्तममहातवं नमे ॥ २५ ॥ (खित्तियं) अंबरंतर विया रणिआहिं। ललिअ हंस बहू गामिणिआहिं॥ पीणसोणि थण सालिणि–आहिं। सकल कमल दल–लोअणिआहिं ॥ २६ ॥ (दीवयं) पीण निरंतर थण भर विणमिअ गाय लया–हि। मणि कंचणपसि ढिल मेहल सोहिअ सोणि तडाहिं॥ वरखिंखिणि नेउर सतिलय वलय विभूस–णियाहिं। रइकर चउर मणोहर सुन्दर दसणिआहिं॥ २७॥ (चित्तक्खरा) देव सुंदरीहिं पाय वंदआहिं, वंदिआय जस्स ते सुविक्कमा कम्मा। अप्पणो निडाल–एहिं, मंडणोड्डुण पगारएहिं॥ केहिं केहिं वि अवंग ति–लय पत्त लेह नामएहिं, चिल्लएहि संगयं गयाहिं। भत्ति सन्निविट्ठ वंदणा गयाहिं, हुंति ते वंदिआ पुणो

卐 卐

पुणो ॥२८॥ (नारायओ) तमहं जिणचंदं । अजिअ जिअ मोह ॥ धुअ सव्व किलेस । पयओ पणमामि ॥ २९ ॥ (नंदिअय) थुअ वंदिअस्सा रिसि गणदेव गणेहिं । तो देव बहूहिं पयओ पणममिअस्सा ॥ जस्स जगुत्तम सासणअस्सा । भत्ति वसागय पिन्डिअआहिं ॥ देव वरच्छरसा बहुआहिं । सुर वर रइ गुण पडिअआहिं ॥३०॥ (भासुरय) वंस सद्द तति ताल मेलिए । तिउ क्खराभिराम सद्दमिसए कए अ । सुइ समाणणे अ सुद्ध सज्ज गीय पाय जाल घटिआहिं । वलय मेहला कलाव–नेउरा भिराम सद्द मीसए कए य, देव नट्टिआहिं, हाव भाव बिब्भमप्पगारएहिं, नच्चिऊण अग हारएहिं, वंदिआ य जस्स ते सुविक्कमा कम्मा, तयं तिलोय सव्व सत्त सति कारय, पसंत सव्व पावदोसमेस ह नमामि सतिमुत्तमं जिण ॥३१॥ (नारायओ) छत्त चामर पडाग जूअ जव मडिआ । झय वर मगर तुरय सिरिवच्छ सुलछणा ॥ दीव समुद्द मंदर दिसागय सोहिआ । सत्थियवसह–सीह–रह चक्क–वरंकिया ॥ ३२ ॥ (ललिअय) सहावलट्ठा समप्पइट्ठा । अदोस दुट्ठा गुणेहिं जिट्ठा ॥ पसाय सिट्ठा तवेण पुट्ठा ।

卐 卐

सिरीहिं इट्ठा रिसीहिं जुट्ठा ॥३३॥ (वाणवासिआ) ते तवेण धुवसव्व पावया । सव्व लोअ हिअ मूल पावया ॥ संथुआ अजिय संति पायया । हुंतु मे सिव-सुहाण दायया ॥३४॥ (अपरान्तिका) एव तव वल-विउलं, थुअं मए अजिए संति जिणजुयलं । ववगय कम्म रयमलं, गइं गयं सासयं विउलं ॥३५॥ गाहा । तं बहुगुणप्पसायं मुक्ख सुहेण परमेण अविसायं । नासेउ मे विसायं, कुणउ अ परिसावि अप्पसायं ॥३६॥ गाहा । तं मोएउ अनंदि, पावेउ अ नंदिसेण मभिनंदिं । परिसावि अ सुहनंदि मम य दिसउ संजमे नंदिं ॥३७॥ गाहा पक्खिअचाउम्मासेअं, संवच्छ रिए अवस्स भणिअव्वो । सोअव्वो सव्वेहिं, उवसग्ग निवा-रणो एसो ॥३८॥ जो पढइ जो अ निसुणइ, उभओ कालं पि अजिअ संतिथयं । न हु हुंति तस्स रोगा, पुव्वुप्पन्ना वि नासंति ॥३९॥ जइ इच्छह परम पयं, अहवा कित्ति सुवित्थडं भुवणे । ता तेलुक्कुद्धरणे, जिणवयणे आयरं कुणह ॥४०॥

卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐

卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐

(२) लघु अजितशांति स्मरणम्

उल्लासिवकम नवख निग्गयपहा दडच्छलेण-
गिण, वंदारूण दिसत इव्व पयड निव्वाण मग्गावलिं।
कुंदिंदुज्जल दतकंति मिसओ नीहत नाणकुरु-केरे
दोवि दुइज्ज सोलस जिणे थोसामि खेमकरे ॥ १ ॥
चरम जलहिनीरं जो मिणिज्जजलोंहिं, खय समय
समीर जो जिणिज्जा गईए। सयल नहयल वा लघए
जो पएहिं, अजिय महव सति सो समत्थो थुणेउ ॥२॥
तह वि हु बहुमाणुल्लास भत्तिब्भरेण, गुणकणमवि
कितीहामि चिंतामणि व्व। अलमहव अचिताणंत
सामत्थओ सिं, फलिहइ लहु सव्व वछिअ णिच्छिअ
मे ॥३॥ सयल जय हिआण नाममित्तणे जाण, विह-
डइ लहु दुट्ठा निट्ठ दोघट्ठथट्ट। नमिर सुर किर
डुग्घिट्ट पायरविंदे, समय मजिअ सतो ते जिणिंदेऽभि-
वदे ॥४॥ पसरइ वरकित्ती वड्ढए देहदित्ती विलसइ
भुवि मित्ती जाइए सुप्पवित्ती। फुरई परमतित्ती होइ
ससारछित्ती, जिगजुअ पयभत्ती ही अचिंतोरुसत्ती ॥
५॥ ललिअ पय पयार भूरिदिव्वग हार, फुड घण

卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐

卐 卐

रसभावो दार सिंगार सारं अणि मिस रमणीजद्दंसण–
चछेअ भीया, इव पणमण मंदा कासि नट्टोवयारं ॥
६ ॥ थुणह अजिअसंती ते कया सेस संति कखय रय
पिसंगा छज्जए जाणमुत्ती । सर भस परिरंभा रंभि
निव्वाण लच्छी, घण थण घुसिणंकुप्पंक पिंगीकयव्व
॥७॥ बहुविह नयभंगं वत्थु णिच्चं अणिच्चं, सदसद–
णभिलप्पा लप्पमेगं अणेगं । इय कुनय विरुद्धं सुप्प–
सिद्धं च जेसिं, वयण मवयणिज्जं ते जिणे संभरामि
॥ ८ ॥ पसरइ तियलोए ताव मोहंधयारं, भमइ जय
मसन्नं ताव मिच्छत्ताछन्नं । फुरइ फुड फलंताणंत
णाणंसुपूरो, पयड मजिअसंती झाण सूरो न जाव ॥
॥९॥ अरि करि हरि तिण्हूण्हंबु चोराहि वाही, समर डमर
मारी रुद्द खुद्दोवसग्गा । पलय मजिअ संती कित्तणे
झत्ति जंती, निविड तर तमोहा भक्खरा लुंखिअव्व ॥
१० ॥ निचिअ दुरिअ दारू दित्त झाणग्गि जाला,
परिगयमिव गोरं चिंतिअं जाण रूवं । कणय निहस
रेहा कंति चोरं करिज्जा, चिर थिर मिह लच्छि गाढ
संथंभि अव्व ॥ ११ ॥ अडवि निवडियाणं पत्थिवुत्ता–
सिआणं, जलहि लहरि हीरं ताण गुत्तिट्ठियाणं ।

卐 卐

卐 卐

जलिअ जलण जाला लिंगिआण च झाण जणयइ लहु सतिनाहाजिआण ॥ १२ ॥ हरि करि परिकिण्ण पक्क पाइक्क पुण्ण, सयल पुहवि रज्ज छड्डिअआणसज्ज। तणमिव पडि लग्गं जे जिणा मुत्तिमग्गं, चरण मणुप-वन्ना हुतु ते मे पसन्ना ॥ १३ ॥ छण ससि वयणाहिं फुल्ल नित्तुप्पलाहिं, थण भर नमिरीहिं मुट्ठि गिज्झोदरीहिं। ललिअ भुअ लयाहिं पीण सोणित्थ-लीहिं, सय सुर रमणीहिं वदिआ जेसि पाया ॥ १४ ॥ अरिसकिडिभ कुट्ठ गठि कासाइसर, खय जर वण लूआ सास सोसोदराणि। नह मुह दसणच्छ कुच्छि कण्णाइरोगे, मह जिणजुअ पाया सुप्पसाया हरतु ॥ १५ ॥ इअ गुरुदुह तासे पक्खिए चाउमासे, जिणवर दुग थुत वच्छरे वा पवित्त। पढह सुणह सिज्झाएह झाएह चित्ते, कुणह भुणह वग्घ जेण धाएह सिग्घ ॥ १६ ॥ इय विजयाजियसत्तु पुत्त सिरि अजिय जिणे-सर, तह अइराविसेसेण तणय पचम चक्कीसर। तित्थकर सोलसम सति 'जिणवल्लह' सथुअ कुर मगल मम हरसु दुरिय मखिलपि थुणतह ॥ १७ ॥

❁ ❁ ❁

卐 卐

卐 卐

(३) नमिऊणनामकं स्मरणम् ।

नमिऊण पणय सुरगण, चूडामणि किरण रंजिअं मुणिणो । चलण जुअलं महाभय, पणसण संथवं वुच्छं ॥१॥ सडिय कर चरण नह मुह, नवुड्डु नासा विवन्न लावण्णा । कुट्ठ महारोगानलकुलिंग निद्दड्ढ सव्वंगा ॥२॥ ते तुह चलणा राहण, सलिलंजलि सेअ वुड्ढियच्छया । वणदव दड्ढा गिरिपाय-वव्व पत्ता पुणो लच्छि ॥३॥ दुव्वाय खुभिय जल निहि, उब्भड कल्लोल भीसणारावे । संभंत भय विसठुल, निज्जामय मुक्कवावारे ॥ ४ ॥ अविदलिय जाणवत्ता, खणेण पावंती इच्छिअं कूलं । पासजिण चलणजुअणं, निच्च च्चिअ जे नमंति नरा ॥५॥ खर पवणुध्धुय वणदव, जालावलि मिलिय सयल दुम गहणे । डज्झंत मुद्धमि-यवहु, भीसणपव भीसणंमि वणे ॥६॥ जगगुरुणो कम-जुअलं, निव्वाविय सयल तिहुअणाभोअं । जे संभरंति मणुआ, न कुणइ जलणो भयं तेसिं ॥७॥ विलसंत भोग भीसण, फुरिआरुण नयणतरल जीहालं । उग्ग भुअंगं नवजलय, सत्थहं भीसणायारं ॥ ८ ॥ मन्नति

卐 卐

卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐

कीडसरिस, दूर परिच्छूढ विसम वितवेगा। तुह नाम-वखर फुडसिद्ध, मंत गुरुआ नरा लोए ॥९॥ अडवीसु भिल्ल तक्कर पुलिंद सद्दूल सद्दभीमासु। भय विहुन्न-वुन्न कायर, उल्लूरिअ पहिअ सत्थासु ॥१०॥ अविलुत्त विहव सारा, तुह नाह! पणाममत्त वावारा ववगय विग्घा सिग्घ, पत्ता हिय इच्छियं ठाण ॥ ११ ॥ पज्जलिआ नल नयण, दूर विआरिअ मुह महाकाय। नह कुलिस घाय विअलिअ, गइंद कुंभत्थलाभोअ ॥१२॥ पणय ससमम पत्थिव, नहमणि माणिक्क पडिअ पडिमस्स। तुह वयण पहरण धरा, सीह कुद्धपि न गणंति ॥१३॥ ससिधवल दंत मुसलं, दीह करुल्लाल बुढ्ढिउच्छाह। महुपिंग नयण जुअलं, ससलिल नव-जलहराऽऽरावं ॥१४॥ भीम महागइंद, अच्चासन्नपि ते नवि गणंति। जे तुम्ह चलण जुअलं, मुणिवइ! तुंग समल्लीणा ॥ १५ ॥ समरम्मि तिक्ख खग्गा, भिघाय पविद्ध उध्धुय कबंधे। कुंतविणिभिन्न करि कलह, मुक्क सिक्कारपउरम्मि ॥ १६ ॥ निज्जिय दप्पुध्धुर रिउ, नरिंद निवहा भडा जसं धवल। पावंति पाव पसमिण पासजिण! तुहप्पभावेण ॥ १७ ॥ रोग जल

卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐

जलण विसहर, चोरारिमइंद गय रण भयाइं । पास जिण नामसकि-त्तणेण पसमंति सव्वाइं ॥ १८ ॥ एवं महा भयहरं, पास जिणिंदस्स संथव मुआरं । भविय जणाणंदयरं, कल्लाणपरंपर निहाणं ॥ १९ ॥ राय भय जक्खरक्खस, कुसुमणि दुस्सउण रिक्खपीडासु संझासु दोसु पंथे उवसग्गे तह य रयणीसु ॥ २० ॥ जो पढई जो अ निसुणइ, ताणं कइणो य माणतुंगस्स । पासो पांव पसमेउ, सयल भुवणच्चिअ चलणो ॥ २१ ॥

★ ★ ★

(४) गणधरदेवस्तुतिनामकं स्मरणम् ।

तं जयउ जए तित्थं, जमित्थ तित्थाहिवेण वीरेण । सम्मं पविात्तियं भव्य सत्त संत्ताण सुह जणयं ॥ १ ॥ नासियसयल किलेस्सा, निहय कुलेसा पसत्थ-सुहलेस्सा । सिरि वद्धमाण तित्थस्स, मंगलं दिंतु ते अरिहा ॥ २ ॥ निद्दड्ढकम्मबीआ, बीआ परमेट्ठिणो गुणसमिद्धा । सिद्धा तिजय पसिद्धा, हणंतु दुत्थाणि तित्थस्स ॥३॥ आयार मायरंता, पंचपयारं सया पया-

सत्ता । आयरिआ तह तित्थ, निहय कुतित्थ पयासतु ॥४॥ सम्मसुअ वायगा, वायगा य सिअवाय वायगा वाए । पवयण पडिणीय कएऽवणातु सव्वस्स संघस्स ॥५॥ निव्वाण साहुणुज्जुय, साहुण जणिअ सव्व साहुज्जा तित्थप्पभावगा ते, हवतु परमेट्ठिणो जइणो ॥ ६ ॥
जेणाणुगय णाणं, निव्वाण फलं च चरण मवि हवई । तित्थस्स दंसण त, मगुल भवणेउ सिद्धियरं ॥ ७ ॥
निच्छम्मो सुयधम्मो, समग्ग भव्वगि वग्ग कयसम्मो । गुणसुट्ठिअस्स सघस्स, मगलं सम्ममिह दिसउ ॥ ८ ॥
रम्मो चरित्तधम्मो, सपाविअ भव्व सत्त सिवसम्मो । निसेसकिलेसहरो, हवउ सया सयल सघस्स ॥ ९ ॥
गुणगण गुरुणो गुरुणो, सिवसुह मइणो कुणतु तित्थस्स । सिरि वद्धमाण पहुपय-डिअस्स कुसल समग्गस्स ॥१०॥
जिय पडिवक्खा जक्खा, गोमुह मायग गयमुह पमुक्खा। सिरि बमसति सहिआ, कय नयरक्खा सिव दितु ॥११॥
अंवा पडिहय डिबा, सिद्धा सिद्धाइया पवयणस्स । चक्केसरि वईरुट्टा, सतिसुरी दिसउ सुक्खाणि ॥१२॥
सोलस विज्जा देवीओ, दितु संघस्स मंगलं विउल । अच्छुता सहिआओ विस्सुअ सुयदेवयाउ, समं ॥ १३ ॥

卐 卐

जिण सासण कयरक्खा, जक्खा चउव्वीस सासणसुरा
वि। सुहभावा संतावं तित्थस्स सया पणासंतु ॥१४॥
जिणपवयणम्मि निरया, विरया कुपहाउ सव्वहा सव्वे
वेयावच्च करावि अ, तित्थस्स हवंतु संतिकरा ॥१५॥
जिणसमय सुद्ध सुमग्ग, विहिय भव्वाण जणिय साहज्जो
। गोयरई गोअजसो, सपरिवारो सिवं दिसउ ॥१६॥
गिह गुत्त खित्त जलथल, वण पव्वय वासि देव देविओ
जिण सासण ठिआणं, दुहाणि सव्वाणि निहणंतु ॥१७॥
दस दिसिपाला सक्खित्त-पालया नवग्गहा सनक्खत्ता।
जोइणिराउग्गह काल-पास कुलिअद्ध पहरेहिं ॥१८॥
सह कालकंटएहिं सविट्ठिठ वच्छेहिं कालवेलाहिं। सव्वे
सव्वत्थ सुहं, दिसंतु सव्वस्स संघस्स ॥१९॥ भवणवइ
वाणमंतर, जोइस वेमाणिआ य जे देवा। धरणिंद
सक्क सहिआ, दलंतु दुरिआइं तित्थस्स ॥२०॥ चक्कं
जस्स जलंतं, गच्छइ पुरओ पणासियतमोहं। तं
तित्थस्स भगवओ, नमो नमो वद्धमाणस्स ॥२१॥ सो
जयउ जिणो वीरो, जस्सऽज्जवि सासणं जए जयइ।
सिद्धिपहसासणं कुपह, नासणं सव्वभय महणं ॥२२॥
सिरि उसभसेण पमुहा, हयभय निवहा दिसंतु तित्थस्स।

卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐

सव्व जिणाण गुणहारिणोऽणह वच्छिय सव्व ॥ २३ ॥
सिरि वद्धमाण तित्याहिवेण तित्थ समप्पिय जस्स ।
सम्म सुहम्मसामि, दिसउ सुह सयल सघस्स ॥ २४ ॥
पयइए भद्दियाजे, भद्दाणि दिसंतु सयल सघस्स ।
इयरसुराविहु सम्म जिग गणहर कहिय कारिस्स ॥२५॥
इय जो पढइ तिसझ दुस्सज्झ तस्स नत्थि किंपि जए ।
जिणदत्ताणाय ठिओ सो, सुनिट्ठिअठ्ठो सुही होई ॥२६॥

(५) गुरूपारतव्यनामक स्मरणम् ।

मयरहिय गुणगण रयण, सायर सायर पण-मिऊण । सुगुरुजण पारतत उवहिव्व थुणामि त चेव ॥ १ ॥ निम्महिय मोह जोहा, निहय विरोहा पणट्ठ सदेहा । पणयगि वग्गदाविअसुह सदोहा सुगुण गेहा ॥ २ ॥ पत्तसुजइत्त सोहा, समत्थ परतित्थ जणिअ सखोहा। पडिभग्ग लोह जोहा, दसिअ सुमहत्थ सत्थोहा ॥३॥ परिहरिअ सत्थवाहा, हय दुहदाहा सिवंबतरु-साहा । सपाविअ सुहलाहा, खीरोदहिणुव्व अग्गाहा

卐 卐

॥४॥ सुगुणजण जणिअ पुज्जा, सज्जो निरुवज्ज गहिअ पव्वज्जा । सिवसुह साहण सज्जा, भवगुरु गिरि चूरणे वज्जा ॥ ५ ॥ अज्ज सुहम्मप्पमुहा, गुणगण निव्वहा सुरिंद विहिअ महा । ताणंतिसंझं नामं, न पणासइ जियाणं ॥६॥ पडिवज्जिय जिणदेवो, देवाय-रिओ दुरंत भवहारि । सिरि नेमिचंद सूरी, उज्जोअण सूरिणो सुगुरु ॥ ७ ॥ सिरिवद्धमाण सूरी, पयडीकय सूरिमंत माहप्पो । पडिहय कसाय पसरो, सरय संस-कुव्व सुह जणओ ॥ ८ ॥ सुहसील चोर चप्परण, पच्चलो निच्चलो जिणमयम्मि । जुगपवर सुद्ध सिद्धंत, जाणओ पणय सुगुण जणो ॥९॥ पुरओ दुल्लह महि व ल्लहस्स अणहिल्लवाडए पयडं । मुक्का विआरिऊणं, सीहेण व दव्वलिंगि गया ॥१०॥ दसमच्छेरय निसिव-प्फुरंत सच्छंद सूरिमय तिमिरं । सूरेणव सूरिजिणेसरेण हयमहिअ दोसेण ॥ ११ ॥ सुकइत्तपत्त कित्ती, पयडिअ गुत्ती पसंत सुहमुत्ती । पहय परवाइ दित्ती, जिणचंद जईसरो मंती ॥१२॥ पयडिअ नवगसुत्तत्थ रयणु-कोसो पणासिअ पओसो । भव भीअ भविअ जणमण, कयसंतोसो विगयदोसो ॥ १३ ॥ जुग पवरागम सार,

卐 卐

卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐

प्परूवणा करण बधुरो धणिअं । सिरि अभयदेव सूरी, मुणिपवरो परम पसमधरो ॥१४॥ कय सावय संतासो, हरिव्व सारंग भग्ग सदेहो । गय समय दप्पदलणो, आसाइअ पवर कव्वरसो ॥१५॥ भीम भव काणणम्मि अ दसिअ गुरुवयण रयण सदेहो । निसेस सत्त गुरुओ, सूरी जिणवल्लहो जयइ ॥१६॥ उवरिट्ठिअ सच्चरणो चउरणुओगप्पहाण सचरणो । असम मयराय महणो, उद्धमुहो सहई जस्स करो ॥ १७ ॥ दसिअ निम्मल निच्चल दतगणो गणिय सावओत्थ भओ । गुरु गिरि गरुओ सरहुव्व, सूरि जिणवल्लहो होत्था ॥ १८ ॥ जुग पवरागम पीऊ-सपाण पीणिय मणा कया भव्वा। जेण जिणवल्लहेण, गुरुणा तं सव्वहा वदे ॥ १९ ॥ विप्फुरिय पवर यवयण, सिरोमणी वूढदुव्वह खमो य जो सेसाण सेसुव्व, सहइ सत्ताण ताणकरो ॥ २० ॥ सच्चरिआण महोण सुगुरूण पारतत मुव्वहइ । जयइ जिणदत्तसूरी, सिरि निलओ पणयमुणितिलओ ॥२१॥

卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐

卐 卐

(६) सिग्घमवहरउ नामकं स्मरणम् ।

सिग्घमवहरउ विग्घं, जिण वीराणाणुगामि संघस्स । सिरि पासजिणो थंभण, पुरट्ठिओ निट्ठिआनिट्ठो ॥ १ ॥ गोयम सुहम्म पमुहा, गणवइणो विहिअ भव्व सत्तासुहा । सिरि वद्धमाण जिण तित्थ, सुत्थयं ते कुणंतु सया ॥२॥ सक्का इणो सुरा जे, जिण वेयावच्च कारिणो संति । अवहरिय विग्घ संघा, हवंतु ते संघ संतिकरा ॥३॥ सिरिथंभणयट्ठिय पास, सामि पयपउम पणय पाणीणं । निद्दलिय दुरिय विंदो, धरणिंदो हरउ दुरिआइं ॥ ४ ॥ गोमुहपमुक्ख जक्खा, पडिहय पडिवक्ख पक्ख लक्खा ते । कय सुगुण संघ रक्खा, हवंतु संपत्तासिव सुक्खा ॥ ५ ॥ अप्पडिचक्का पमुहा, जिणसासण देवयाय जिणपणया । सिद्धाइआ समेया, हवंतु संघस्स विग्घहरा ॥ ६ ॥ सक्काएसा सच्चउर–पुरट्ठिओ वद्धमाण जिणभत्तो । सिरि बंभसांति जक्खो, रक्खउ संघं पयत्तेण ॥ ७ ॥ खित गुह गुत्त संताण, देस देवाहिदेवया ताओ । निव्वुइपुर पहिआणं, भव्वाण कुणंतु सुक्खाणि ॥ ८ ॥ चक्केसरि

卐 卐

卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐

चंदकधरा, विहिपय रिउछिन्न कधरा धणिय । सिवस-
सरणि तग्ग सघस्स, सव्वहा हरउ विग्घाणि ॥ ९ ॥
तित्थवइ वद्धमाणो, जिणेसरो सगओ सुसघेण । जिण-
चदो-ऽभयदेवो, रक्खउ जिणवल्लहो पहु म ॥ १० ॥
सो जयउ वद्धमाणो, जिणेसरो णेसरुव्व हयतिमिरो ।
जिणचदाऽभयदेवा, पहुणो जिणवल्लहा जे अ ॥ ११ ॥
गुरु जिणवल्लह पाए-ऽभयदेव पहुत्तदायगे वदे ।
जिणचद जिणेसर-वद्धमाण तित्थस्स वुड्ढिकए ॥१२॥
जिणदत्ताण सम्म, मन्नति कुणति जे य कारति ।
मणसा वयसा वउसा, जयतु साहम्मिआ तेवि ॥ १३ ॥
जिणदत्त गुणे नाणा-इणो सया जे धरतिधारिति ।
दसिअ सिअचाय पए नमामि साहम्मिआ तेवि ॥१४॥

---

(७) उवसग्गहर नामक स्मरणम्।

उवसग्गहर पास पास वदामि कम्मघण मुक्क।
विसहर विस निन्नास मगल कल्लाण आवास ॥ १ ॥
विसहर फुलिग मत, कठे धारेइ जो सया मणुओ ।

卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐

卐 卐

तस्स गह रोग मारी, दुट्ठ जरा जंति उवसामं ॥ २ ॥
चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ ।
नर तिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्ख दोहग्गं ॥३॥
तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणि कप्पपायवब्भहिए ।
पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ४ ॥ इअ
संथुओ महायस, भत्तिब्भर निब्भरेण हिअएण । ता
देव ! दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास जिणचंद ! ॥ ५ ॥

❋ इति सप्त स्मरणानि ❋

ऋषिमंडलस्तोत्रम् ।

आद्यन्ताक्षरसंलक्ष्य-मक्षरं व्याप्य यत स्थितं ।
अग्निज्वाला समं नाद-बिंदुरेखासमन्वितं ॥ १ ॥
अग्निज्वालासमाक्रांतं मनोमलविशोधकं । देदीप्यमानं
हृत्पद्मे, तत्पदं नौमि निर्मलं ॥२॥ अर्हमित्यक्षरं ब्रह्म-
वाचकं परमेष्ठिनः । सिद्धचक्रस्य सदबीजं, सवतःप्रणिदध्महे
॥३॥ ॐ नमोऽर्हद्भ्य इशेभ्यः, ॐ सिद्धेभ्यो नमो नमः
ॐ नमः सर्वसूरिभ्यः, उपाध्यायेभ्य ॐ नमः ॥ ४ ॥

卐 卐

卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐

ॐ नम सर्वसाधुभ्य, ॐ ज्ञानेभ्यो नमो नम. । ॐ नमस्तत्वदृष्टिभ्य-श्चारित्रेभ्यस्तु ॐ नमः ॥ ५ ॥ श्रेयसेऽस्तु श्रियेस्त्वेत-दर्हदाधष्टक शुभम् स्थानेष्वष्टसु विन्यस्त, पृथग् वीजसमन्वित ॥ ६ ॥ आद्य पद शिखा रक्षेत्, पर रक्षेतु मस्तकं । तृतीयं रक्षेन्नेत्रे द्वे, तुर्यं रक्षेच्च नासिकाम् ॥ ७ ॥ पचमं तु मुख रक्षेत्, षष्ठ रक्षेच्च घटिका । नाभ्यत सप्तम रक्षेद्, रक्षेतपादातम ष्टमम् ॥८॥ पूर्वप्रणवत सात, सरेफो द्वयब्धिपचषान् । सप्ताष्टदशसूर्याङ्कान्, श्रितो बिंदुस्वरान् पृथक् ॥९॥ पूज्यनामाक्षरा आद्या, पचैते ज्ञानदर्शने । चारित्रेभ्यो नमो मध्ये, ह्रीं सात समलकृत ॥ १० ॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रु ह्रू ह्रें ह्रैं ह्रो ह्रौं ह्रः, असिआ उसासम्यग् ज्ञानदर्शनचारित्रेभ्यो ह्रीं नमः । जम्बूवृक्षधरो द्वीप, क्षारोदधिसमावृत । अर्हदाद्यष्टकरैष्ट काष्ठाधिष्ठै-रलकृत ॥११॥ तन्मध्ये सगतो मेरु, कूटलक्षैरलङ्कृत उच्चैरुच्चैस्तरस्तारस्तारामडलमडित ॥१२॥ तस्योपरिसकारान्त, बीजमध्यास्य सर्वगम् । नमामि बिम्ब-मार्हन्त्य, ललाटस्थ निरजनम् ॥ १३ ॥ अक्षय निर्मल शान्त, बहुल जाड्यतोज्झितम् । निरीह निरहकार,

卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐

卐 卐
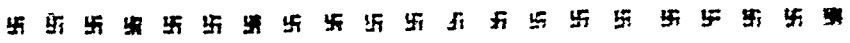
सारं सारतरं घनम् ॥ १४ ॥ अनुद्धतं शुभं स्फीतं, सात्त्विकं राजसं मतम् । तामसं विरसम्बुद्धं, तैजसं शर्वरीसमम् ॥१५॥ साकार च निराकारं, सरसं विरसं परम् । परापरं परातीतं, परम्परपरापरम् ॥ १६ ॥ एकवर्णं द्विवर्णं च, त्रिवर्णं तुर्यवर्णकम् । पंचवर्णं महा-वर्णं, सपरं च परापरम् ॥ १७ ॥ सकलं निष्कलं तुष्टं, निर्वृतं भ्रान्तिवर्जितम् । निरञ्जनं निराकारं, निर्लेपं वीतसंश्रयम् ॥१८॥ ईश्वरं ब्रह्मसम्बुद्धं, बुद्धं सिद्धं मतं गुरुम् । ज्योतीरूपं महादेवं, लोकालोकप्रकाशकम् ॥ १९ ॥ अर्हदाख्यस्तु वर्णान्तः सरेफो बिन्दुमण्डितः । तुर्यस्वरसमायुक्तो, बहुधा नादमालितः ॥ २० ॥ अस्मिन् बीजे स्थिताः सर्वे ऋषभाद्या जिनोत्तमाः । वर्णैर्निजैर्निजैर्युक्ता, ध्यातव्यास्तत्र संगताः ॥ २१ ॥ नादश्चन्द्रसमाकारो, बिन्दुर्नीलसमप्रभः । कलारुणस-मासान्तः, स्वर्णाभः सर्वतोमुखः ॥ २२ ॥ शिरः संलीन ईकारो, विनीलो वर्णतः स्मृतः वर्णानुसारसंलीनं, तीर्थकृन्मडलं स्तुमः ॥ २३ ॥ चन्द्रप्रभपुष्पदन्तौ, नाद-स्थितिसमाश्रितौ । बिन्दुमध्यगतौ नेमि, सुव्रतौ जिन-सत्तमौ ॥२४॥ पद्मप्रभवासुपूज्यौ, कलापदमधिष्ठितौ ।

卐 卐

शिरइस्थितसलीनौ, पार्श्वमल्ली जिनोत्तमौ ॥ २५ ॥ शेषास्तीर्थकरा सर्वे, हरस्थाने नियोजिता । मायावी-जाक्षरं प्राप्ता--श्चतुर्विंशतिरर्हताम् ॥ २६ ॥ गतराग-द्वेषमोहा, सर्वपापविवर्जिता । सर्वदा सवकालेषु, ते भवन्तु जिनोत्तमा ॥ २७ ॥ देवदेवस्य यच्चक्र, तस्य चक्रस्य या विभा । तयाच्छादितसर्वांग, मा मा हिनस्तु डाकिनी ॥ २८ ॥ देवदेवस्य यच्चक्र, तस्य चक्रस्य या विभा । तयाच्छादितसर्वांग, मा मां हिनस्तु राकिनी ॥ २९ ॥ देवदेवस्य यच्चक्र, तस्य चक्रस्य या विभा । तयाच्छादितसर्वांग, मा मा हिनस्तु लाकिनी ॥ ३० ॥ देवदेवस्य यच्चक्र, तस्य चक्रस्य या विभा । तयाच्छा-दितसर्वांग, मा मा हिनस्तु काकिनी ॥३१॥ देवदेवस्य यच्चक्र, तस्य चक्रस्य या विभा । तयाच्छादितसर्वांग, मा मा हिनस्तु शाकिनी ॥ ३२ ॥ देवदेवस्य यच्चक्र, तस्य चक्रस्य या विभा । तयाच्छादितसर्वांग, मा मा हिनस्तु हाकिनी ॥ ३३ ॥ देवदेवस्य यच्चक्र, तस्य चक्रस्य या विभा । तयाच्छादितसर्वांगं, मा मा हिनस्तु याकिनी ॥ ३४ ॥ देवदेवस्य यच्चक्र, तस्य चक्रस्य या विभा । तयाच्छादितसर्वांग, मा मां हिंसन्तु पन्नगा

卐 卐

॥ ३५ ॥ देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा। तयाच्छादितसर्वांगं, मा मां हिंसन्तु हस्तिनः ॥ ३६ ॥ देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा। तयाच्छादितसर्वांगं, मा मां हिंसन्तु राक्षसाः ॥३७॥ देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा। तयाच्छादितसर्वांगं, मा मां हिंसन्तु वह्नयः ॥ ३८ ॥ देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा। तयाच्छादितसर्वांगं, मा मां हिंसन्तु सिंहकाः ॥ ३९ ॥ देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा। तयाच्छादितसर्वांगं, मा मां हिंसन्तु दुर्जनाः ॥ ४० ॥ देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा। तयाच्छादितसर्वांगं, मा मां हिंसन्तु भूमिपाः ॥ ४१ ॥ श्रीगौतमस्य या मुद्रा, तस्या या भुवि लब्धयः। ताभिरभ्युद्यतज्योति रर्हं सर्वनिधीश्वरः ॥ ४२ ॥ पातालवासिनो देवा, देवा भूपीठवासिनः। स्वर्वासिनोऽपि ये देवाः, सर्वे रक्षन्तु मामितः ॥ ४३ ॥ येऽवधिलब्धयो ये तु, परमावधिलब्धयः। ते सर्वे मुनयो देवाः, मां संरक्षन्तु सर्वदा ॥ ४४ ॥ दुर्जना भूतवेतालाः, पिशाचा मुद्गलास्तथा। ते सर्वेऽप्युप-शाम्यन्तु, देवदेवप्रभावतः ॥ ४५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीश्च

卐 卐

धृतिर्लक्ष्मी-गौरी चण्डी सरस्वती । जयाम्बा विजया नित्या क्लिन्नाऽजिता मदद्रवा ॥ ४६ ॥ कामाङ्गा कामबाणा च, सानन्दा नन्दमालिनी । माया मायाविनी रौद्री, कला काली कलिप्रिया ॥ ४७ ॥ एता सर्वा महादेव्यो, वर्तन्ते या जगत्त्रये । मह्यं सर्वा प्रयच्छन्तु, कान्ति कीर्ति धृतिं मतिम् ॥ ४८ ॥ दिव्यो गोप्य सुदुष्प्राप्य, श्रीऋषिमण्डलस्तव । भाषितस्तीर्थनाथेन, जगत्त्राण-कृतोऽनघ ॥ ४९ ॥ रणे राजकुले वह्नौ, जले दुर्गे गजे हरौ । श्मशाने विपिने घोरे, स्मृतो रक्षति मानवम् ॥५०॥ राज्यभ्रष्टा निजं राज्य, पदभ्रष्टा निज पदम् लक्ष्मीभ्रष्टा निजा लक्ष्मीं प्राप्नुवन्ति न सशय ॥ ५१ ॥ भार्यार्थी लभते भार्या, पुत्रार्थी लभते सुतम् । वित्तार्थी लभते वित्त, नर स्मरणमात्रत ॥५२॥ स्वर्णे रूप्ये पट कांस्ये, लिखित्वा यस्तु पूजयेत् । तस्यैवाष्टमहासिद्धि-गृहे वसति शाश्वती ॥५३॥ भूर्जपत्रे लिखित्वेद, गलके मूर्ध्नि वा भुजे । धारित सर्वदा दिव्य, सर्वभीति विनाशकम् ॥ ५४॥ भूतै प्रेतैर्ग्रहैर्यक्षै, पिशाचैर्मुद्गलैर्मलै । वातपित्तकफोद्रेकै-र्मुच्यते नात्र संशय ॥५५॥ भूर्भुव स्वस्त्र-

卐 卐

यीपीठवर्तिनः शाश्वता जिनाः । तैः स्तुतैर्वन्दितैर्दृष्टै-र्यत्फलं तत्फलं श्रुतौ ॥ ५६ ॥ एतद्गोप्यं महास्तोत्रं, न देयं यस्य कस्यचित् । मिथ्यात्ववादिने दत्ते, बालहत्या पदे पदे ॥ ५७ ॥ आचाम्लादि तपः कृत्वा, पूजयित्वा जिनावलीम् । अष्टसाहस्रिको जापः, पूजयित्वा जिना-वलीम् । अष्टसाहस्रिको जापः, कार्यस्तत्सिद्धिहेतवे ॥ ५८ ॥ शतमष्टोत्तरं प्रात-र्ये पठन्ति दिने दिने । तेषां न व्याधयो देहे, प्रभवन्ति न चापदः ॥ ५९ ॥ अष्ट-मासावधि यावत्, प्रातः प्रातस्तु यः पठेत् । स्त्रोत्रमेतद् महातेजो, जिनबिम्बं स पश्यति ॥६०॥ दृष्टे सत्यर्हतो बिम्बे, भवे सप्तमके ध्रुवम् । पदं प्राप्नोति शुद्धात्मा, परमानन्दनन्दितः ॥ ६१ ॥ विश्ववन्द्यो भवेद् ध्याता, कल्याणानि च सोऽश्नुते । गतः स्थानं परं सोऽपि, भूयस्तु न निवर्तते ॥ ६२ ॥ इदं स्तोत्रं महास्तोत्रं स्तुतीनामुत्तमं परम् । पठनात स्मरणाज्जापाल्लभ्यते पदमुत्तमम् ॥ ६३ ॥ इति ॥

卐 卐

卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐

तिजयपहुत्त-नामकस्तोत्रम् ।

तिजय-पहुत्त-पयासय, अट्ठ-महापाडिहेर-जुत्ताण । समयक्खित्तठिआण, सरेमि चक्क जिणिंदाण ॥ १ ॥ पणवीसा य असीआ, पनरस पन्नास जिणवर-समूहो । नासेउ सयल दुरिअ, भविआण भत्ति जुत्ताण ॥२॥ वीसा पणयाला वि य, तीसा पन्नत्तारी जिणवरिंदा । गह-भूअ-रक्ख-माइणि, घोर-वसग्गं पणासतु ॥ ३ ॥ सत्तरि पणतीसा वि य, सट्ठी पचेव जिणगणो एसो । वाहिजलजलणहरिकरि, चोरारिमहाभय हरउ ॥ ४ ॥ पणपन्ना य दसेव य, पन्नट्ठी तह य चेव चालीसा । रक्खतु मे सरीर, देवासुरपणमिआ सिद्धा ॥ ५ ॥ ॐ हरहुह सरसुस, हरहुह तह य चेव मरसुंसः । आलिहिय-नाम-गब्भ चक्कं किर सव्वओभद्द ॥६॥ ॐ रोहिणी पन्नत्ती, वज्जसिंखला तह य वज्ज-अंकुसिआ । चक्केसरि नरदत्ता, कालि महाकालि तह य गोरी ॥ ७ ॥ गधारी महजाला, माणवी वइरुट्ट तह य अच्छुता । माणसि महमाणसिआ, विज्जादेवीओ रक्खतु ॥ ८ ॥ पचदस-कम्मभूमिसु, उप्पन्न सत्तरी

卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐

卐 卐

जिणाण सयं । विविहरयणाइवन्नो-वसोहिअं हरउ दुरिआइं ॥९॥ चउतीसअइसयजुआ, अट्ठ-महापाडि-हेरकयसोहा । तित्थयरा गयमोहा, झाएअव्वा पयत्तेणं ॥ १० ॥ ॐ वरकणयसंखविद्दुम, मरगयघणसन्निहं विगयमोहं । सत्तारिसयं जिणाणं, सव्वामरपूइअं वंदे, स्वाहा ॥ ११ ॥ ॐ भवणवइवाणवंतर जोइसवासी-विमाणवासी अ । जे के वि दुट्ठदेवा, ते सव्वे उवस-मंतु मम, स्वाहा ॥१२॥ चंदणकप्पूरेणं, फलए लिहि-ऊण खालिअं पीअं । एगंतराइगहभुअ, साइणिमुग्गं पणासेइ ॥ १३ ॥ इअ सत्तारिसयं जंतं, सम्मं मंतं दुवारि पडिलिहिअं । दुरिआरिविजयवंतं, निब्भंतं निच्चमच्चेह ॥ १४ ॥ इति ॥

श्रीभक्तामर - स्तोत्रम् ।

(वसन्ततिलका-छन्दः)

भक्तामर-प्रणत-मौलि-मणि-प्रभाणा, मुद्द्-योतक दलित-पाप-तमो-वितानम् । सम्यक् प्रणम्य

卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐

जिन-पाद-युगं युगादा, वालम्बनं भवजले पतता जनानाम् ॥१॥ य. संस्तुत सकलवाङ्मय-तत्त्व-बोधा दुद्भूत-बुद्धि पटुभि सुरलोकनाथैं. । स्तोत्रैर्जगत्त्रि-तय-चित्तहरैरुदारै, स्तोष्ये किलाहमपि त प्रथमं जिनेन्द्रम् ॥२॥ युग्मम् ॥ बुद्धया विनापि विबुधार्चित पादपीठ!, स्तोतु समुद्यत-मतिर्विगतत्रपोऽहम् । बाल विहाय जल-सस्थितमिन्दु-बिम्ब, -मन्य. क इच्छति जन सहसा ग्रहीतुम् ? ॥३॥ वक्तु गुणान् गुणसमुद्र! शशाङ्ककान्तान्, कस्ते क्षम सुरगुरु-प्रतिमोऽपि बुद्धया ? कल्पान्तकालपवनोद्धतनक्र-चक्र, को वा तरीतुमलमम्बुनिधि भुजाभ्याम् ? ॥४॥ सोऽहं तथापि तव भक्ति-वशान्मुनीश!, कर्तुं स्तवं विगत-शक्ति-रपि प्रवृत्त । प्रीत्यात्म-वीर्य्यमविचार्य मृगो मृगेन्द्रं, नाभ्येति किं निज-शिशो. परिपालनार्थम् ? ॥ ५ ॥ अल्पश्रुत श्रुतवता परिहास-धाम, त्वद्भक्तिरेव मुख-रीकुरुते बलान्माम् । यत् कोकिलः किल मधौ मधुर विरौति, तच्चारुचूतकलिका-निकरैक-हेतु ॥ ६ ॥ त्वत्सस्तवेन भव-सतति-सन्निवद्ध, पापं क्षणात क्षय-मुपैती शरीरभाजाम् । आक्रान्तलोकमलि-नीलमशे-

卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐

卐 卐

पमाशु, सूर्यांशु-भिन्नमिव शार्वरमन्धकारम् ॥ ७ ॥
मत्वेति नाथ! तव संस्तवनं मयेद, मारभ्यते तनुधि-
यापि तव प्रभावात् । चेतो हरिष्यति सतां नलिनी-
दलेषु, मुक्ताफलद्युतिमुपैति ननूद-विन्दुः ॥ ८ ॥
आस्तां तव स्तवनमस्त-समस्त-दोषं, त्वत्संकथापि
जगतां दुरितानि हन्ति । दूरे सहस्र-किरणः कुरुते
प्रभैव, पद्माकरेषु जलजानि विकासभाञ्जि ॥ ९ ॥
नात्यद्भुतं भुवन-भूषण! भूतनाथ!, भूतैर्गुणैर्भुवि
भवन्तमभिष्टुवन्तः । तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन
किं वा, भूत्याश्रितं य इह नात्म-समं करोति? ॥१०॥
दृष्ट्वा भवन्तमनिमेषविलोकनीयं, नान्यत्र तोषमुप-
याति जनस्य चक्षुः । पीत्वा पयः शशि-कर-द्युतिदु-
ग्धसिन्धोः, क्षारं जलं जलनिधेरशितुं क इच्छेत् ?
॥ ११ ॥ यैः शान्तराग-रुचिभिः परमाणुभिस्त्वं,
निर्मापितस्त्रिभुवनैक-ललामभूत!। तावन्त एव खलु
तेऽप्यणवः पृथिव्यां, यत्ते समानमपरं न हि रूपमस्ति
॥ १२ ॥ वक्त्रं क्व ते सुर-नरोरग-नेत्र-हारि, निः-
शेषनिर्ज्जित-जगत-त्रितयोपमानम् । बिम्बं कलङ्क-
मलिनं क्व निशाकरस्य, यद् वासरे भवति पाण्डु-

卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐

पलाश-कल्पम् ॥१३॥ सम्पूर्ण-मण्डल-शशाङ्क-कला कलाप-शुभ्रा गुणास्त्रिभुवन तव लङ्घयन्ति । ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वर-नाथमेक, कस्तान् निवारयति सचरतो यथेष्टम् ? ॥ १४ ॥ चित्र किमत्र यदि ते त्रिदशाङ्गनाभि-र्नीत मनागपि मनो न विकार मार्गम् । कल्पान्तकालमरुता चलिताचलेन, कि मन्दराद्रिशिखर चलित कदाचित् ? ॥ १५ ॥ निर्धूम-वर्त्तिरपवर्जित-तैलपूर, कृत्स्न जगत्त्रयमिद प्रकटीकरोषि । गम्यो न जातु मरुता चलिताचलाना, दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ ! जगत्प्रकाश ॥ १६ ॥ नास्त कदाचिदुपयासि न राहु-गम्य, स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्जगन्ति । नाम्भो-धरोदरनिरुद्ध-महा-प्रभाव, सूर्यातिशायि-महिमाऽसि मुनीन्द्र ! लोके ॥ १७ ॥ नित्योदय दलित-मोह-महा-न्धकारं, गम्य न राहु-वदनस्य न वारिदानाम् । विभ्राजते तव मुखाब्जमनल्प-कान्ति, विद्योतयज्जग-दपूर्वशशाङ्क-बिम्बम् ॥ १८ ॥ किं शर्वरीषु शशिना-ऽह्नि विवस्वता वा?, युष्मन्मुखेन्दु-दलितेषु तमस्सु नाथ, । निष्पन्नशालिवनशालिनि जीवलोके कार्य कियज्जलधरैर्जल-भार-नम्रै ? ॥ १९ ॥ ज्ञान यथा

卐 卐

त्वयि विभाति कृतावकाशं, नैवं तथा हरिहरादिषु नायकेषु । तेजः स्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्वं, नैवं तु काच-शकले किरणाकुलेऽपि ॥ २० ॥ मन्ये वरं हरिहरादय एव दृष्टा, दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोष--मेति । किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः, कश्चि--न्मनो हरति नाथ ; भवान्तरेऽपि ॥ २१ ॥ स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान् , नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता । सर्वा दिशो दधति भानि सहस्र-रश्मि प्राच्येव दिग्जनयति स्फुरदंशु - जालम् ॥ २२ ॥ त्वा-मामनन्ति मुनयः परमं पुमांसमादित्य-वर्णममलं तमसः परस्तात् । त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयन्ति मृत्युं, नान्यः शिव. शिव-पदस्य मुनीन्द्र । पन्थाः ॥२३॥ त्वामव्ययं विभुमचिन्त्यमसंख्यमाद्यं, ब्रह्माणमीश्वरमनन्तमनङ्ग-केतुम् । योगीश्वरं विदितयोगमनेकमेकं, ज्ञान-स्वरूप-ममलं प्रवदन्ति सन्तः ॥२४॥ बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चित । बुद्धि-बोधात्, त्वं शंकरोऽसि भुवनत्रय-शंकरत्वात् । धाताऽसि धीर; शिवमार्गविधेर्विधानाद्, व्यक्तं त्वमेव भगवन् ! पुरुषोत्तमोऽसि ॥२५॥ तुभ्यं नमस्त्रिभुवना-र्तिहराय नाथ !, तुभ्यं नमः क्षिति-तलामल-भूषणाय ।

卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐

तुभ्य नमस्त्रिजगत परमेश्वराय, तुभ्यं नमो जिन भवोदधि-शोषणाय ॥ २६ ॥ को विस्मयोऽत्र ? यदि नाम गुणैरशेषै-स्त्व सश्रिता निरवकाशतया मुनीश । दोषै - रुपात्त - विविधाश्रयजात-गर्वैः, स्वप्नान्तरेऽपि न कदाचिदपीक्षितोऽसि ॥ २७ ॥ उच्चैरशोक-तरु-संश्रित-मुन्मयूख, -माभाति रूपममल भवतो नितान्तम् । स्पष्टोल्लसत्किरण-मस्ततमो-वितान, बिम्ब रवेरिव पयोधर-पार्श्ववर्ति ॥२८॥ सिंहासने मणि-मयूखशिखा-विचित्रे, विभ्राजते तव वपु कनकावदातम् । बिम्ब वियद्विलसदशु-लता - वितान, तुङ्गो - दयाद्रिशिरसीव सहस्ररश्मे ॥२९॥ कुन्दावदात-चल-चामर-चारु-शोभं, विभ्राजते तव वपु कलधौतकान्तम । उद्यच्छशाङ्क-शुचि-निर्झर - वारिधार - मुच्चैस्तट सुरगिरेरिव शात-कौम्भम् ॥३०॥ छत्र-त्रय तव विभाति शशाङ्ककान्त-मुच्चं स्थित स्थगित-भानु-करप्रतापम् । मुक्ताफल - प्रकरजाल विवृद्ध-शोभ, प्रख्यापयत् त्रिजगत परमेश-वरत्वम् ॥ ३१ ॥ उन्निद्र-हेम-नव-पङ्कज-पुञ्जकान्ति-पर्युल्लसन्नखमयूख शिखाभिरामौ । पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र ! धत्त, पद्मानि तत्र विबुधा परिकल्प-

卐 卐

श्रीकल्याणमन्दिरस्तोत्रम् ।

(वसन्ततिलका-छन्दः)

कल्याणमन्दिरमुदारमवद्यभेदि, -भीताभयप्र-दमनिन्दितमंघ्रिपद्मम् । संसारसागरनिमज्जदशेषजन्तु, पोतायमानमभिनम्य जिनेश्वरस्य ॥ १ ॥ यस्य स्वयं सुरगुरुर्गरिमाम्बुराशेः, स्तोत्रं सुविस्तृतमतिर्न विभुर्वि-धातुम् । तीर्थेश्वरस्य कमठस्मयधूमकेतो, -स्तस्याहमेष किल संस्तवनं करिष्ये ॥२॥ युग्मम् । सामान्यतोऽपि तव वर्णयितुं स्वरूप, मस्मादृशाः कथमधीश ! भवन्त्यधीशाः ? । धृष्टोऽपि कौशिकशिशुर्यदि वा दिवान्धो, रूपं प्ररूपयति किं किल धर्मरश्मेः ?॥ ३ ॥ मोहक्षयादनुभवन्नपि नाथ ! मर्त्यो, नूनं गुणान् गणयितुं न तव क्षमेत । कल्पान्तवान्तपयसः प्रकटोऽपि यस्मा, न्मीयेत केन जलधेर्ननु रत्नराशिः ॥ ४ ॥ अभ्युद्यतोऽस्मि तव नाथ ! जडाशयोऽपि, कर्तुं स्तवं लसदसङ्ख्यगुणाकरस्य । बालोऽपि किं न निजबाहु युगं वितत्य, विस्तीर्णतां कथयति स्वधियाम्बुराशेः ॥ ५ ॥ ये योगिनामपि न यान्ति गुणास्तवेश !, वक्तुं

卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐

कथं भवति तेषु ममावकाशः । जाता तदेवमसमीक्षितकारितेयं, जल्पन्ति वा निजगिरा ननु पक्षिणोऽपि ॥६॥ आस्तामचिन्त्यमहिमा जिन ! संस्तवस्ते, नामापि पाति भवतो भवतो जगन्ति । तीव्रातपोपहतपान्थजनान्निदाघे, प्रीणाति पद्मसरसः सरसोऽनिलोऽपि ॥ ७ ॥ हृद्वर्तिनि त्वयि विभो ! शिथिलीभवन्ति, जन्तोः क्षणेन निबिडा अपि कर्मबन्धाः । सद्यो भुजङ्गममया इव मध्यभाग, -मभ्यागते वनशिखण्डिनि चन्दनस्य ॥ ८ ॥ मुच्यत एव मनुजाः सहसा जिनेन्द्र !, रौद्रैरुपद्रवशतैस्त्वयि वीक्षितेऽपि । गोस्वामिनि स्फुरिततेजसि दृष्टमात्रे, चौरैरिवाशु पशवः प्रपलायमानैः ॥ ९ ॥ त्वं तारको जिन ! कथं भविनां त एव, त्वामुद्वहन्ति हृदयेन यदुत्तरन्तः । यद्वा दृतिस्तरति यज्जलमेष नूनं, -मन्तर्गतस्य मरुतः स किलानुभावः ॥ १० ॥ यस्मिन् हरप्रभृतयोऽपि हतप्रभावाः, सोऽपि त्वया रतिपतिः क्षपितः क्षणेन । विध्यापिता हुतभुजः पयसाऽथ येन, पीतं न किं तदपि दुर्धरवाडवेन ? ॥ ११ ॥ स्वामिन्ननल्पगरिमाणमपि प्रपन्ना, स्त्वां जन्तवः कथमहो हृदये दधानाः । जन्मोदधिं लघु तरन्त्यतिलाघवेन, चिन्त्यो

卐 卐

न हन्त महतां यदि वा प्रभावः ॥ १२ ॥ क्रोधस्त्वया यदि विभो ! प्रथमं निरस्तो, ध्वस्ता स्तदा वत कथं किल कर्म–चौराः। प्लोषत्यमुत्र यदि वा शिशिराऽपि लोके, नीलद्रुमाणि विपिनानि न किं हिमानी ॥१३॥ त्वां योगिनो जिन ! सदा परमात्मरूप, –मन्वेषयन्ति हृदयाम्बुजकोशदेशे । पूतस्य निर्मलरुचेयदि वा किमन्य दक्षस्य सम्भवि पदं ननु कर्णिकायाः ॥१४॥ ध्याना–ज्जिनेश ! भवतो भविनः क्षणेन, देहं विहाय परमा–त्मदशां व्रजन्ति । तीव्रानलादुपलभावमपास्य लोके, चामीकरत्वम–चिरादिव धातुभेदाः ॥ १५ ॥ अन्तः सदैव जिन ! यस्य विभाव्यसे त्वं, भव्यैः कथं तदपि नाशयसे शरीरम् । एतत्स्वरूपमथ मध्य विवर्तिनो हि, यद्विग्रहं प्रशमयन्ति महानुभावाः ॥ १६ ॥ आत्मा मनीषिभिरयं त्वदभेदबुद्ध्या, ध्यातो जिनेन्द्र ! भवतीह भवत्प्रभावः । पानीय–मप्यमृतमित्यनुचिन्त्यमानं, किं नाम नो विष–विकारमपाकरोति ? ॥ १७ ॥ त्वामेव वीततमसं परवादिनोऽपि, नूनं विभो; हरिहरादिधिया प्रपन्नाः । किं काचकामलिभिरीश; सितोऽपि शङ्खो, नो गृह्यते विविधवर्ण–विपर्ययेण ? ॥१८॥ धर्मोपदेश

卐 卐

卐 卐

समये सविधानुभावा, — दास्ता जनो भवति ते तरुरप्यशोक । अभ्युदगते दिनपतौ समहीरुहो ऽपि, किं वा विबोधमुपयाति न जीवलोक ॥१९॥ चित्र विभो । कथमवाङ् मुखवृन्तमेव, विष्वक् पतत्य विरला सुरपुष्पवृष्टि । त्वदोग्चरे सुमनसा यदि वा मुनीश ।, गच्छन्ति नूनमध एव हि बन्धनानि ॥२०॥ स्थाने गभीरहृदयोदधिसम्भवाया, पीयूषता तव गिर समुदीरयन्ति । पीत्वा यत परमसम्मदसङग —भाजो, भव्या व्रजन्ति तरसाप्यजरामरत्वम् ॥२१॥ स्वामिन् । सुदूरमवनम्य समुत्पतन्तो, मन्ये वदन्ति शुचय सुरचामरौघा । येऽस्मे नति विदधते मुनिपुङगवाय, ते नूनमूर्ध्वगतय खलु शुद्धभावा ॥ २२ ॥ श्याम गभीर — गिरमुज्जवलहेमरत्न, — सिंहासनस्थमिह भव्यशिखण्डिनस्त्वाम् । आलोकयन्ति रभसेन नदन्त—मुच्चै,—श्चामीकराद्रिशिरसीव नवाम्बुवाहम् ॥ २३ ॥ उदग्च्छता तव शितिद्युतिमण्डलेन, लुप्तच्छदच्छविर—शोकतरुर्बभूव । सान्निध्यतोऽपि यदि वा तव वीतराग ।, नीरागता व्रजति को न सचेतनोऽपि ॥ २४ ॥ भो भो प्रमादमवधूय भजध्वमेन, मागत्य निर्वृतिपुरीं

卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐

प्रति सार्थवाहम् । एतन्निवेदयति देव ! जगत्त्रयाय, मन्ये नदन्नभिनभः सुरदुन्दुभिस्ते ॥ २५ ॥ उद्द्योतितेषु भवता भुवनेषु नाथ !, तारान्वितो विधुरयं विहताधिकारः । मुक्ता कलापकलितोच्छ्वसितातपत्र व्याजात्त्रिधा धृततनुर्ध्रुव मभ्युपेतः ॥ २६ ॥ स्वेन प्रपूरितजगत्त्रयपिण्डितेन, कान्तिप्रतापयशसामिव सञ्चयेन । माणिक्यहेमरजतप्रविनिर्मितेन, सालत्रयेण भगवन्नभितो-विभासि ॥ २७ ॥ दिव्यस्त्रजो जिन ! नमत् - त्रिदशाधिपाना, - मुत्सृज्य रत्नरचितानपि मौलिबन्धान् । पादौ श्रयन्ति भवतो यदि वा परत्र, त्वत्सङ्गमे सुमनसो न रमन्त एव ॥ २८ ॥ त्वं नाथ ! जन्मजलधेर्विपराङ्मुखोऽपि, यत्ता-रयस्यसुमतो निजपृष्ठलग्नान् । युक्तं हि पार्थिवनिपस्य सतस्तवैव, चित्रं विभो !, यदसि कर्म- विपाकशून्यः ॥ २९ ॥ विश्वेश्वरोऽपि जनपालक ! दुर्गतस्त्वं, किं वाऽक्षर-प्रकृतिरप्यलिपि-स्त्वमीश ! । अज्ञानवत्यपि सदैव कथञ्चिदेव, ज्ञानं त्वयि स्फुरति विश्वविकाशहेतुः ॥३०॥ प्राग्भारसम्भृतनभांसि रजांसि रोषा-दुत्था-पितानि कमठेन शठेन यानि । छायाऽपि तै---न नाथ

卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐

हता हताशो, ग्रस्तस्त्वमीभिरयमेव परं दुरात्मा ।।३१।। यग्दर्ज्जदूर्जितघनौघमदभ्रभीम, भ्रश्यत्तडिन्मुसलमांसल-घोरधारम् । दैत्येन मुक्तमथ दुस्तरवारि दध्रे, तेनैव तस्य जिन दुस्तरवारिकृत्यम् ।।३२।। ध्वस्तोर्ध्वकेशविकृताकृतिमर्त्यमुण्ड–प्रालम्बभृद्भयदवक्त्रविनिर्यदग्नि । प्रेतव्रज प्रति भवन्तमपीरितो य, सोऽस्याऽभवत्प्रतिभव भवदु.खहेतु ।।३३।। धन्यास्त एव भुवनाधिप ये त्रिसन्ध्य,-माराधयन्ति विधिवद्विधुतान्यकृत्या । भक्त्योल्लसत्पुलकपक्ष्मलदेहदेशा, पादद्वयं तव विभो भुवि जन्मभाज ।। ३४ ।। अस्मिन्नपारभववारिनिधौ मुनीश, मन्ये न मे श्रवणगोचरता गतोऽसि । आकर्णिते तु तव गोत्रपवित्रमन्त्रे, किं वा विपद्विषधरी सविध समेति ? ।। ३५ ।। जन्मान्तरेऽपि तव पादयुग न देव, मन्ये मया महितमीहितदानदक्षम् । तेनेह जन्मनि मुनीश पराभवाना, जातो निकेतनमहं मथिताशयानाम् ।। ३६ ।। नूनं न मोहतिमिरावृतलोचनेन, पूर्वं विभो सकृदपि प्रविलोकितोऽसि । मर्माविधो विधुरयन्ति हि मामनर्था, प्रोद्यत्प्रबन्धगतयः कथमन्यथैते ।। ३७ ।। आकर्णितोऽपि महितोऽपि निरीक्षितोऽपि, नूनं

卐 卐

न चेतसि मया विधृतोऽसि भक्त्या। जातोऽस्मि तेन जनबान्धव ! दुःखपात्रं, यस्मात् क्रिया· प्रतिफलन्ति न भावशून्याः ॥ ३८ ॥ त्वं नाथ ! दुःखिजनवत्सल! हे शरण्य !, कारुण्यपुण्यवसते वशिनां वरेण्य ! । भक्त्या नते मयि महेश ! दयां विधाय, दुःखांकुरोद्दल-नतत्परतां विधेहि ॥ ३९ ॥ निःसंख्यसारशरणं शरण शरण्य,-मासाद्य सादितरिपुप्रथितावदातम् । त्वत्पा-दपङ्कजमपि प्रणिधानवन्ध्यो,-वध्योऽस्मि चेद् भुवन-पावन ! हा हतोऽस्मि ॥ ४० ॥ देवेन्द्रवन्द्य ! विदिता-खिलवस्तुसार !, संसारतारक ! विभो ! भुवनाधिनाथ ! । त्रायस्व देव ! करुणाहृद ! मां पुनीहि, सिदन्तमद्य भयदव्यसनाम्बुराशेः ॥ ४१ ॥ यद्यस्ति नाथ ! भवद-ङ्घ्रिसरोरुहाणां:, भक्ते फलं किमपि सन्ततिसञ्चि-तायाः । तन्मे त्वदेकशरणस्य शरण्य ! "भूयाः, स्वामी त्वमेव भुवनेऽत्र भवान्तरेऽपि" ॥ ४२ ॥ इत्थं समा-हितधियो विधिवज्जिनेन्द्र !, सान्द्रोल्लसत्पुलककञ्चु-किताङ्गभागाः । त्वद्विम्बनिर्मलमुखाम्बुजबद्धलक्ष्या, ये संस्तवं तव विभो ! रचयन्ति भव्याः ॥ ४३ ॥ जननयनकुमुदचन्द्र - प्रभास्वराः स्वर्गसंपदो भुक्त्वा ।

卐 卐

卐 卐

ते विगलितमलनिचया, अचिरान्मोक्षं प्रपद्यन्ते ॥ युग्मम् ॥ ४४ ॥ इति ॥

श्रीभद्रबाहुस्वामिविरचिता ग्रहशान्ति ।

जगद्गुरु नमस्कृत्य, श्रुत्वा सद्गुरुभाषितम् । ग्रहशान्ति प्रवक्ष्यामि, लोकाना सुखहेतवे ॥ १ ॥ जिनेन्द्रै खेचरा ज्ञेया, पूजनीया विधिक्रमात । पुष्पै-विलेपनैर्धूपै, -नैवेद्यैस्तुष्टिहेतवे ॥ २ ॥ पद्मप्रभस्य मार्त्तण्ड, -श्चन्द्रश्चन्द्रप्रभस्य च । वासुपूज्ये भूमिपुत्रो, बुधोऽप्यष्टजिनेषु च ॥ ३ ॥ विमलानन्तधर्मारा, शान्ति कुन्थुर्नमिस्तथा । वर्धमानस्तथैतेषा, पादपद्मे बुधा न्यसेत् ॥४॥ ऋषभाऽजितसुपार्श्वा, -श्चाभिनन्दनशीतलौ । सुमति सभवस्वामी, श्रेयासश्चेषु गीष्पति ॥ ५ ॥ सुविधौ कथित शुक्र, सुव्रतस्य शनैश्चर । नेमिनाथे भवेद्राहु, केतु श्रीमल्लिपार्श्वयोः ॥ ६ ॥ जनाल्लग्ने च राशौ च, यदा पीडयन्ति खेचरा । तदा सम्पूजयेद्धीमान्, खेचरं सहितान् जिनान् ॥ ७ ॥

卐 卐

卐 卐

नवग्रहपूजा ।

पद्मप्रभजिनेन्द्रस्य, नामोच्चारेण भास्करः। शान्ति तुष्टि च पुष्टि च, कुरु कुरु श्रियम् ॥१॥ इति श्रीसूर्यपूजा ॥ चन्द्रप्रभजिनेन्द्रस्य, नाम्ना तारागणाधिपः। प्रसन्नो भव शान्ति च, रक्षां कुरु जयं ध्रुवम् ॥ २ ॥ इति श्री चन्द्रपूजा ॥ सर्वदा वासुपूज्यस्य, नाम्ना शान्ति जयश्रियम् । रक्षां कुरु धरासूनो, अशुभोऽपि शुभो भव ॥ ३ ॥ इति श्रीभौमपूजा ॥ विमलानन्तधर्माराः शान्तिः कुन्थुनमिस्तथा । महावीरश्च तन्नाम्ना, शुभो भूयाः सदा बुधः ॥ ४ ॥ इति श्री बुधपूजा ॥ ऋषभाजितसुपार्श्वा–श्चाभिनन्दनशीतलौ । सुमतिः संभवस्वामी, श्रेयांसश्चजिनोत्तमः ॥ ॥ ५ ॥ एतत्तीर्थकृतां नाम्ना, पूज्योऽशुभः शुभो भव । शांति तुष्टि च पुष्टि च, कुरु देवगणार्चितः ॥ ६ ॥ इति श्रीगुरुपूजा ॥ पुष्पदन्तजिनेन्द्रस्य, नाम्ना दैत्यगणार्चितः । प्रसन्नो भव शान्ति च, रक्षां कुरु कुरु श्रियम् ॥ ७ ॥ इति शुक्रपूजा ॥ श्री सुव्रतजिनेन्द्रस्य, नाम्ना सूर्याङ्गसंभवः । प्रसन्नो भव शान्ति च, रक्षां

卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐

कुरु कुरु श्रियम् ॥ ८ ॥ इति शनैश्चरपूजा ॥ श्रीनेमि नाथतीर्थेश,-नामत सिंहिकासुत । प्रसन्नो भव शान्ति च, रक्षा कुरु कुरु श्रियम् ॥ ९ ॥ इति राहुपूजा ॥ राहो सप्तमराशिस्थ,-कारेण दृश्यसवरे । श्रीमल्लि-पार्श्वयोर्नाम्ना, केतो. शान्ति जयश्रियम् ॥ १० ॥ इति केतुपूजा ॥ इति भणित्वा, स्वस्ववर्णकुसुमाञ्जलिक्षेप-जिनग्रहपूजा कार्या, तेन सर्वपीडाया. शान्तिर्भवति । अथ सर्वेषा वा ग्रहाणामेकदा पीडायामयं विधि ॥ नव-कोष्टकमालेख्य, मण्डल चतुरस्रकम् । ग्रहास्तत्र प्रतिष्ठाप्या वक्ष्यमाणा क्रमेण तु ॥ ११ ॥ मध्ये हि भास्कर, स्थाप्य पूर्वं -दक्षिणत. शशी । दक्षिणस्या धरासूनु-र्बुध पूर्वोत्तरेण च ॥ १२ ॥ उत्तरस्या सुरा-चार्य, पूर्वस्या भृगुनन्दन । पश्चिमाया शनि स्थाप्यो, राहुर्दक्षिणपश्चिमे ॥१३॥ पश्चिमोत्तरत केतु, -रिति स्थाप्या क्रमाद् ग्रहा । पट्टे स्थालेऽथ वाऽऽग्नेय्या, ईशान्या तु सदा बुधं ॥ १४ ॥ आर्या ॥ आदित्यसो-ममङ्गलबुधगुरुशुक्रा शनैश्चरो राहु । केतुप्रमुखा खेटा, जिनपतिपुरतोऽवतिष्ठन्तु ॥१५॥ इति भणित्वा पचवर्णकुसुमाञ्जलिक्षेपश्च जिनपूजा च कार्या ।

卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐

पुष्पगन्धादिभिर्धूपैर्नैवेद्यैः फलसंयुतैः । वर्णसदृशदानैश्च, वस्त्रैश्च दक्षिणान्वितैः ॥ १६ ॥ जिननामकृतोच्चारा, देशनक्षत्रवर्णकैः । पूजिता संस्तुता भक्त्या, ग्रहाः सन्तु सुखावहाः ॥ १७ ॥ जिनानामग्रतः स्थित्वा, ग्रहाणां शान्तिहेतवे । नमस्कारशतं भक्त्या, जपेदष्टोत्तरं शतम् ॥ १८ ॥ एवं यथानामकृताभिषेकै-रालेपनैर्धूपनपूजनैश्च । फलैश्च नैवेद्यवरैर्जिनानां, नाम्ना ग्रहेन्द्रा वरदा भवन्तु ॥ १९ ॥ साधुभ्यो दीयते दानं, महोत्साहो जिनालये । चतुर्विधस्य सङ्घस्य, बहुमानेन पूजनम् ॥ २० ॥ भद्रबाहुरुवाचेदं, पञ्चमः श्रुतकेवली । विद्या-प्रवादतः पूर्वात्, ग्रहशान्तिरुदीरिता ॥ २१ ॥ इति ॥

श्रीजिनपञ्जरस्तोत्रम् ।

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अर्हद्भ्यो नमो नमः । ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं सिद्धेभ्यो नमो नमः । ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं आचार्येभ्यो नमो नमः । ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं उपाध्यायेभ्यो

卐 卐

卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐

नमो नम । ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं श्रीगौतमस्वामिप्रमुख-
सर्वसाधुभ्यो नमो नम ॥ १ ॥ एष पञ्चनमस्कार,
सर्वपापक्षयङ्कर । मङ्गलानां च सर्वेषां, प्रथमं
भवति मङ्गलम् ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं जये विजये, अर्हं
परमात्मने नम । कमलप्रभसूरीन्द्रो, भाषते जिनप-
ञ्जरम् ॥ ३ ॥ एकभवतोपवासेन, त्रिकाल य पठे-
दिदम् । मनोऽभिलषित सर्वं, फल स लभते ध्रुवम्
॥ ४ ॥ भूशय्या-ब्रह्मचर्येण, क्रोधलोभ - विवर्जित ।
देवताग्रे पवित्रात्मा, षण्मासैर्लभते फलम् ॥ ५ ॥
अर्हन्त स्थापयेन्मूर्ध्नि, सिद्ध चक्षुर्ललाटके । आचार्यं
श्रोत्रयोर्मध्ये, उपाध्याय तु नासिके ॥ ६ ॥ साधुवृन्द
मुखस्याग्रे, मन शुद्धि विधाय च । सूर्यचन्द्रनिरोधेन,
सुधी सर्वार्थसिद्धये ॥७॥ दक्षिणे मदनद्वेषी, वामपार्श्वे
स्थितो जिन । अंगसधिषु सवज्ञ, परमेष्ठी शिव-
ङ्कर ॥ ८ ॥ पूर्वाशा च जिनो रक्षेद्, आग्नेयीं
विजितेन्द्रिय । दक्षिणाशा पर ब्रह्म, नैऋतिं च त्रि-
कालवित् ॥ ९ ॥ पश्चिमाशा जगन्नाथो, वायव्यां
परमेश्वर । उत्तरा तीर्थकृत्सर्वा -मीशानेऽपि निर-
ञ्जन ॥१०॥ पाताल भगवानर्हन्नाकाश पुरुषोत्तम ।

卐 卐

रोहिणीप्रमुखा देव्यो, रक्षन्तु सकलं कुलम् ॥ ११ ॥ ऋषभो मस्तकं रक्षेद्, अजितोऽपि विलोचने । संभवः कर्णयुगलेऽभिनन्दनस्तु नासिके ॥ १२ ॥ ओष्ठौ श्रीसुमती रक्षेद्, दन्तान् पद्मप्रभो विभुः । जिह्वां सुपार्श्वदेवोऽयं, तालु चन्द्रप्रभाभिधः ॥१३॥ कण्ठं श्री सुविधी रक्षेद्, हृदयं श्रीसुशीतलः । श्रेयांसो वाहुयुगलं, वासुपूज्यः करद्वयम् ॥१४॥ अंगुलीर्विमलो रक्षे,-दनन्तोऽसौ स्तनावपि । श्रीधर्मोऽप्युदरास्थीनि, श्रीशान्तिर्नाभिमण्डलम् ॥ १५ ॥ श्रीकुन्थुर्गुह्यकं रक्षे,-दरो रोमकटीतटम् । मल्लिरूरुपृष्ठवंशं, जंघे च मुनिसुव्रतः ॥ १६ ॥ पादांगुलीर्नमी रक्षेद्, श्रीनेमिश्चरणद्वयम् । श्रीपार्श्वनाथः सर्वांगं, वर्द्धमानश्चिदात्मकम् ॥ १७ ॥ पृथिवीजलतेजस्क,-वाय्वाकाशमयं जगत् । रक्षेदशेषपापेभ्यो, वीतरागो निरञ्जनः ॥ १८ ॥ राजद्वारे श्मशाने च, संग्रामे शत्रुसंकटे । व्याघ्रचोराग्निसर्पादिभूतप्रेतभयाश्रिते ॥ १९ ॥ अकाले मरणे प्राप्ते, दारिद्र्यापतसमाश्रिते । अपुत्रत्वे महादोषे, मूर्खत्वे रोगपीडिते ॥ २० ॥ डाकिनी शाकिनी, ग्रस्ते, महाग्रहगणार्दिते । नद्युत्तारेऽध्ववैषम्ये, व्यसने चापदि स्मरेत् ॥ २१ ॥

卐 卐

प्रातरेव समुत्थाय, यं स्मरेज्जिनपञ्जरम् । तस्य किञ्चिद्भय नास्ति, लभते सुखसम्पद ॥ २२ ॥ जिन-पञ्जरनामेद, य स्मरेदनुवासरम् । कमलप्रभराजेन्द्र', श्रिय स लभते नर ॥ २३ ॥ प्रात समुत्थाय पठेत् कृतज्ञो, य' स्तोत्रमेतज्जिनपञ्जराख्यम् । आसादयेत् सकमलप्रभाख्यो, लक्ष्मीं मनोवाञ्छितपूरणाय ॥२४॥ श्रीरुद्रपल्लीयवरेण्यगच्छे, देवप्रभाचार्यपदाब्जहस । वादीन्द्रचूडामणिरेष जैनो, जीयाद्गुरु' श्रीकमलप्र-भाख्य' ॥ २५ ॥ इति ॥

बडी शांति

भो भो भव्या ! शृणुत वचन प्रस्तुतं सर्व-मेतद्, ये यात्राया त्रिभुवनगुरोरार्हता भक्तिभाज । तेषा शान्तिर्भवतु भवतामर्हदादिप्रभावादारोग्य श्रीधृतिमतिकरी क्लेशविध्वसहेतु' ॥ १ ॥

भो भो भव्यलोका ! इह हि भरतैरावतवि-देहसम्भवन। समस्ततीर्थकृता जन्मन्यासनप्रकम्पान-

卐 卐

न्तरमवधिना विज्ञाय, सौधर्माधिपतिः सुघोषाघंटाचा-लनानन्तरं सकलसुरासुरेन्द्रैः सह समागत्य सविनयम-र्हद्भट्टारकं गृहीत्वा, गत्वा कनकाद्रिशृंगे, विहित-जन्माभिषेकः शान्तिमुद्घोषयति । ततोऽहं कृतानुका-रमिति कृत्वा महाजनो येन गतः सपन्थाः । इति भव्यजनैः सह समागत्य स्नात्रपीठे स्नात्रं विधाय, शांतिमुद्घोषयामि । तत्पूजा-यात्रा-स्नात्रादि-महो-त्सवानन्तरमिति कृत्वा कर्णं दत्त्वा निशम्यतां निशम्यतां स्वाहा ॥

ॐ पुण्याहं पुण्याहं प्रीयन्तां प्रीयन्तां भगव-न्तोऽर्हन्तः सर्वज्ञाः सर्वदर्शिनस्त्रिलोकनाथास्त्रिलोकम-हिता स्त्रिलोकपूज्या-स्त्रिलोकेश्वरास्त्रि-लोकोद्द्योत-कराः ॥

ॐ श्रीकेवलज्ञानि - निर्वाणी - सागर-महायश-विमल-सर्वानुभूति-श्रीधर-दत्त-दामोदर-सुतेज - स्वामि-मुनिसुव्रत - सुमति-शिवगति-अस्ताग-नमीश्वर-अनिल-यशोधर-कृतार्थ-जिनेश्वर - शुद्धमति-शिव-कर-स्यन्दन-सम्प्रति इति एते अतीत-चतुर्विंशति-तीर्थङ्कराः ॥

卐 卐

卐 卐

ॐ श्रीऋषभ-अजित-सभव-अभिनंदन-सुमति-पद्मप्रभ-सुपार्श्व-चन्द्रप्रभ-सुविधि-शीतल--श्रेयांस-वासुपूज्य-विमल-अनन्त-धर्म-शाति-कुन्थु-अर-मल्लि-मुनिसुव्रत-नमि-नेमि-पार्श्व-वर्द्धमान इति एते वर्त्तमानजिनाः ॥

ॐ श्रीपद्मनाभ-शूरदेव-सुपार्श्व-स्वयप्रभ-सर्वानुभूति-देवश्रुत-उदय-पेढाल-पोट्टिल-शतकोर्ति-सुव्रत-अमम-निष्कषाय-निष्पुलाक-निर्मम-चित्रगुप्त-समाधि सवर-यशोधर-विजय-मल्लि-देव-अनन्तवीर्य-भद्रकर इति एते भावितीर्थङ्करा जिना ॥ शान्ता शान्तिकरा भवन्तु ॥

ॐ मुनयो मुनिप्रवरा रिपुविजयदुर्भिक्ष कातारेषु दुर्गमार्गेषु रक्षन्तु वो नित्यम् ॥

ॐ श्रीनाभि-जितशत्रु-जितारि-सवर-मेघ-धर-प्रतिष्ठ-महासेन-सुग्रीव-दृढरथ-विष्णु-वसुपूज्य-कृतवर्म-सिंहसेन-भानु-विश्वसेन-सूर-सुदर्शन-कुम्भ-सुमित्र-विजय-समुद्रविजय-अश्वसेन-सिद्धार्थ इति एते वर्त्तमानचतुर्विंशतिजिनजनका ॥

卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐

卐 卐

ॐ श्रीमरुदेवा–विजया–सेना–सिद्धार्था सुमङ्गला–सुसीमा–पृथिवीमाता–लक्ष्मणा–रामा –नन्दा–विष्णु – जया – श्यामा–सुयशा–सुव्रता–अचिरा–श्रीदेवी–प्रभावती–पद्मा – वप्रा – शिवा –वामा–त्रिशला इति एते वर्त्तमानजिनजनन्यः ।।

ॐ श्रीगोमुख महायक्ष त्रिमुख यक्षनायक तुम्बरु कुसुम मातंग विजय अजित ब्रह्मा यक्ष राज कुमार षण्मुख पाताल किन्नर गरुड़ गन्धर्व यक्षराज कुबेर वरुण भृकुटि गोमेध पार्श्व ब्रह्म शान्ति इति एते वर्त्तमानजिनयक्षाः ।।

ॐ श्रीचक्रेश्वरी अजितबला दुरितारि काली महाकाली श्यामा शान्ता भृकुटि सुतारका अशोका मानवी चण्डा विदिता अंकुशा कन्दर्पा निर्वाणी बला धारिणी धरणप्रिया नरदत्ता गान्धारी अम्बिका पद्मावती सिद्धायिका इति एता वर्त्तमानचतुर्विंशति–तीर्थङ्करशासनदेव्यः ।।

ॐ ह्रीं श्रीं धृति मति कीर्ति कांति बुद्धि लक्ष्मी मेधा विधा साधन प्रवेश निवेशनेषु सुगृहीत–

卐 卐

नामानो जयतु ते जिनेन्द्रा । ॐ रोहिणी प्रज्ञप्ति वज्रशृंखला वज्राकुशी चक्रेश्वरी पुरुष दत्ता काली महाकाली गौरी गांधारी सर्वास्त्रा महार्ज्वाला मानवी वैराट्या अछुप्ता मानसी महामानसी एता षोडश विद्यादेव्यो रक्षन्तु मे स्वाहा । ॐ आचार्योपाध्यायप्र-भृतिचातुर्वर्ण्यस्य श्रीश्रमणसघस्य शान्तिर्भवतु । ॐ तुष्टिभवतु, पुष्टिर्भवतु । ॐ ग्रहाश्चन्द्रसूर्यागारकबुध-बृहस्पतिशुक्रशनैश्चरराहुकेतुसहिता सलोकपाला सोम यम वरुण कुबेर वासवादित्य स्कन्द विनायक ये चान्येऽपि ग्रामनगरक्षेत्रदेवतादयस्ते, सर्वे प्रीयन्ता प्रीयन्ता अक्षीणकोष कोष्ठागारा नरपतयश्च भवन्तु स्वाहा । ॐ पुत्र मित्र भ्रातृ कलत्र सुहृत् स्वजन सबधी-बधु वर्गसहिता नित्य चामोदप्रमोदकारिण । अस्मिश्च भूमण्डले आयतननिवासिना साधु-साध्वी-श्रावक-श्राविकाणा रोगोपसर्गव्याधि-दु खदुर्भिक्षदौ-र्मनस्योपशमनाय शातिर्भवतु ॥ ॐ तुष्टि-पुष्टि-ऋद्धि-वृद्धि-मांगल्योत्सवा भवतु । सदा प्रादुर्भूतानि (दुरि-तानि) पापानि शाम्यन्तु शत्रव पराङमुखा भवन्तु स्वाहा । श्रीमते शातिनाथाय, नम शाति-विधायिने ।

त्रैलोक्यस्यामराधीश-मुकुटाभ्यर्चितांघ्रये ॥१॥ शांतिः शान्तिकरः श्रीमान्, शान्तिं दिशतु मे गुरुः । शांतिरेव सदा तेषां, येषां शान्तिर्गृहे गृहे ॥ २ ॥ ॐ उन्मृष्ट-रिष्टदुष्टग्रहगतिः दुःस्वप्नदुर्निमित्तादि । सम्पादित-हितसम्पन्नामग्रहणं जयति शान्तेः ॥ ३ ॥ श्रीसंघपौर-जनपद, राजाधिपराजसन्निवेशानाम् । गोष्टिकपुर-मुख्यानां व्याहरणैर्व्याहरेच्छान्तिम् ॥ ४ ॥ श्रीश्रमण-संघस्य शान्तिर्भवतु, श्रीपौरलोकस्य शान्तिर्भवतु, श्रीजनपदानां शान्तिर्भवतु, श्रीराजाधिपानां शान्ति-र्भवतु, श्रीराजसन्निवेशानां शान्तिर्भवतु, श्रीगोष्टिकानां शान्तिर्भवतु, ॐ स्वाहा ॐ स्वाहा ॐ ह्रीं श्रीं पार्श्व-नाथाय स्वाहा । एषा शान्तिः प्रतिष्ठायात्रा-स्नात्रा-द्यवसानेषु शान्तिकलशं गृहीत्वा कुंकुमचन्दनकर्पूराग-रुधूपवासकुसुमांजलिसमेतः स्नात्रपीठे श्रीसंघसमेतः शुचिशुचिवपुः पुष्पवस्त्रचन्दनाभरणालंकृतः चंदन-तिलकं विधाय, पुष्पमालां कंठे कृत्वा, शांतिमुद्घोष-यित्वा, शान्तिपानीयं मस्तके दातव्यमिति । नृत्यन्ति नित्यं मणिपुष्पवर्षं, सृजन्ति गायन्ति च मङ्गलानि । स्तोत्राणि गोत्राणि पठन्ति मंत्रान्, कल्याणभाजो हि

जिनाभिषेके ॥ १ ॥ अहं तित्थयरमाया, सिवादेवी तुम्हनयरनिवासिनी । अम्ह सिवं तुम्ह सिवं, असुहो वसम सिवं भवतु स्वाहा ॥ २ ॥ शिवमस्तु सर्वजगत परहितनिरता भवन्तु भूतगणाः । दोषा प्रयान्तु नाशं, सर्वत्र सुखीभवन्तु लोका ॥३॥ उपसर्गाः क्षयं यान्ति, छिद्यन्ते विघ्नवल्लयः । मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥४॥ सर्वमंगलमांगल्यं, सर्वकल्याणकारणम् । प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥

॥ जय तिहुअणस्तोत्र ॥

जय तिहुअण वरकप्परुक्ख ! जयजिण ! धन्नंतरि ! जय तिहुअण-कल्लाण-कोष ! दुरिअक्करि-केसरि ! तिहुअण - जण - अविलंघिआण ! भुवणत्तयसामिअ ! , कुणसु सुहाइं जिणेस ! पास ! थंभणयपुरट्ठिअ ! ॥ १ ॥

तइं समरत लहंति झत्ति, वर-पुत्त-कलत्तइं, धण्ण-सुवण्ण-हिरण्ण-पुण्ण जण भुंजइ रज्जइं । पिक्खइं मुक्ख असंखसुक्ख तुह पास ! पसाइण, इह तिहुअण वरकप्परुक्ख ! सुक्खइं कुण मह जिण ॥२॥

卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐

जरजज्जर परिजुण्णकण्ण नट्ठुट्ठ सुकुट्ठिण,
चक्खुक्खीण खएण खुण्ण नर सल्लिय सूलिण ।
तुह जिण ! सरण रसायणेण लहु हुंति पुणण्णव,
जय धन्नंतरि ! पास ! मह वि तुह रोगहरो भव ॥३॥

विज्जा – जोइस – मंत–तंत–सिद्धीउ अपयत्तिण,
भुवनऽब्भुअ अट्ठविह सिद्धि सिज्झहि तुह नामिण ।
तुह नामिण अपवित्तओ वि जण होइ पवित्तउ,
तं तिहुअण कल्लाण-कोष ! तुह पास निरुत्तउ ॥४॥

खुद्द पउत्ताइ मंत – तंत – जंताइं विसुत्ताइ,
चर–थिर–गरल–गहुग्ग – खग्ग – रिउवग्ग वि गंजइ ।
दुत्थिअ – सत्थ अणत्थ – घत्थ नित्थारइ दय करि,
दुरियइ हरउ स पासदेउ दुरियक्करि – केसरि ॥ ५ ॥

तुह आणा थंभेइ भीम – दप्पुद्धुर – सुरवर,
रक्खस - जक्ख - फणिंदविंद - चोरानल - जलहर ।
जल - थलचारि रउद्द - खुद्द - पसु - जोइणि जोइय,
इह तिहुअण अविलंघि आण जय पास ! सुसामिय ॥६॥

पत्थिअ अत्थ अणत्थ तत्थ भत्तिब्भरनिब्भर,
रोमंचंचिय चारुकाय किन्नर नर सुरवर ।

卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐

जसु सेवहि कम कमल जुयल पक्खालिय कलिमलु,
सो भुवणत्तय सामि पास मह मद्दउ रिउबलु ॥ ७ ॥

जय जोइय मण कमल भसल । भयपंजर कुंजर ।,
तिहुअण जण आणंद चंद । भुवणत्तय दिणयर ।।
जय मइ मेइणि वारिवाह । जय जंतु पियामह ।,
थंभणयट्ठिय । पासनाह । नाह त्तण कुण मह ॥८॥

बहुविह वन्नु अवन्नु सुन्नु वन्निउ छप्पन्निहि,
मुक्ख धम्म कामत्थ काम नर निय निय सत्थिहि।
जं ज्झायहि बहु दरिसणत्थ बहु नाम पसिद्धउ,
सो जोइय मण कमल भसल सुहु पास पवद्धउ ॥९॥

भय विब्भल रण झणिर दसण थरहरिय सरीरय,
तरलिय नयण विसुन्न गग्गर गिर करुणय ।
तइ सहसत्ति सरंत हुंति नर नासिय गुरुदर,
मह विज्झवि सज्झसइ पास । भयपंजर कुंजर । ।१०।

पइं पासि वियसंत नित्त पत्तंत पवित्तिय-
बाह पवाह पवूढ रूढ दुहदाह सुपुलइय ।
मन्नइ मन्नु सउन्नु पुन्नु अप्पाणं सुरनर,
इय तिहुअण आणंद चंद । जय पास । जिणेसर ।११।

तुह कल्लाण-महेसु घंट टंकारव पिल्लिय,
वेल्लिर मल्ल महल्ल भत्ति सुरवर गंजुल्लिय।
हल्लुप्फलिय पवत्तयंति भुवणे वि महूसव,
इय तिहुअण आणंद चंद जय पास ! सुहुब्भव ॥१२॥
निम्मल केवल किरण नियर विहुरिय तमपहयर !,
दंसिय सयल पयत्थ सत्थ ! वित्थरिय पहाभर ! ।
कलि कलुसिय जण घूयलोयलोयणह अगोयर !,
तिमि रइ निरु हर पासनाह भुवणत्तय दिणयर ! ।१३।
तुह समरण जलवरिस-सित्त माणव मइमेइणि,
अवरावर सुहु मत्थ बोह कंदल दल रेहिणि ।
जायइ फल भर भरिय हरिय दुहदाह अणोवम,
इय मइ मेइणि वारिवाह दिस पास मई मम ॥१४॥
कय अविकल कल्लाण वल्लि उल्लूरिय दुहवणु,
दाविय सग्ग-पवग्गमग्ग दुग्गइ गम वारणु ।
जयजंतुह जणएण तुल्ल जं जणिय हियावहु,
रम्मु धम्मु सो जयउ पासु जयजंतु पियामहु ॥१५॥
भुवणा रण्ण निवास-दरिय-पर दरिसण देवय,
जोइणि पूयण खित्तवाल खुद्दा सुर पसुवय ।

卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐

तुह उत्तट्ठ सुनट्ठ सुट्ठु अविसठुलु चिट्ठहि,
इय तिहुअण वण सीह। पास। पावाइं पणासहि ।१६।
फणि फण फार फुरंत रयण कर रजिय नहयल,
फलिणी कदल दल तमाल नीलुप्पल सामल। ।
कमठासुर उवसग्ग वग्ग ससग्ग अगजिय ।,
जय पच्चक्ख। जिणेस। पास थभणय पुरट्ठिय। ।१७।
मह मणु तरलु पमाणु नेय वायावि विसठुलु,
नेय तणुरवि अविणय सहावु अलस विह लघलु ।
तुह माहप्पु पमाणु देव। कारुण्ण पवित्तउ,
इय मइ मा अवहीरि पास। पालिहि विलवतउ । १८
किं किं कप्पिउ न य कलुणु किं किं व न जपिउ,
किं व न चिट्ठउ किट्ठु देव। दीणय मव लविउ ।
कासु न किय निप्फल्ल लल्लि अम्हेहि दुहत्तिहि,
तह वि न पत्ताउ ताणु किं पि पइ पहु। परिचत्तिहि ।१९
तुहु सामिउ तुहु मायवप्पु तुहु मित्त पियकरु,
तुहु गइ तुहु मइ तुहुजि ताणु तुहु गुरु खेमकरु ।
हउ दुह भर भारिउ राउ निब्भगगह,
लीणउ तुह कम कमल सरणु जिण। पालहि चगह २०

卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐

एह महारिय जत्त देव इहु न्हवण महूसउ,
जं अणलिय गुण गहण तुम्ह मुणिजण अणिसिद्धउ ।
एम पसीहसु पासनाह थंमणयपुरट्ठिय !
इय मुणिवरु सिरिअभयदेउ विन्नवइ अणिंदिय ॥३०॥

॥ अथ श्री शांतिनाथजी नो छन्द ॥

(वीर जिनेसर केरो शिष्य– ए देशी)

शांतिनाथ को कीजे जाप, क्रोड भवोना काटे पाप ॥ शांतिनाथजी म्होटा देव, सुरनर सारे जेहनो सेव ॥ १ ॥ दुःख दारिद्र जावे दूर, सुख संपति होवे भरपूर ॥ ठग फांसी गर जावे भाग, बलती होवे शीतल आग ॥२॥ राज लोक मां कीर्ति घणी, शांति-जिनेश्वर माथे धणी। जो ध्यावे प्रभुजी नुं ध्यान, राजा देव अधिकुं मान ॥ ३ ॥ गड गुंबड़ पीड़ा मिट जाय, देखी दुश्मन लागे पाय। घलो भाग्यो मननो भर्म, पाम्यों समकित काटचां कर्म ॥ ४ ॥ सुणो प्रभु मोरी अरदाश, हूं सेवक तमे पूरो आश। मुझ मन

चिंतित कारज करो, चिन्ता आरति विघ्नज हरो ।५।
मेटो म्हारा आल जजाल, प्रभु मुझने तुं नयण निहाल।
अपनी कीर्ति ठामो ठाम, सुधारो प्रभु जी म्हारा काम
॥ ६ ॥ जो नित्य नित्य प्रभुजी ने रटे, मोती बंधा
फूला कटे । चेपलावण दोनो जल जाय, विण औषध
कट जावे छाय ॥ ७ ॥ शान्तिनाथ ना नाम थी थाय,
आँखें टूट पडल कट जाय । कमलो पीलो जल जल
झरे, शाति जिनेश्वर शाति करे ॥ ८ ॥ गरमी व्याधि
मिटावे रोग, सज्जन मिलनो मले सयोग । एहवो देव
न दीसे और, नहीं चाले दुश्मन को जोर ॥ १० ॥
लुटारा सब जावे नास, दुर्जन फीटी होवे दास ।
शांतिनाथ नी कीर्ति गणी, कृपा करो तमे त्रिभुवन
धणी ॥१०॥ अरज करू छु जोडी हाथ, आप सू नहीं
कोई छानी बात । देख रह्या छो पोते आप, काटो
प्रभुजी म्हारा पाप ॥ ११ ॥ मुज मन चिंतित करियो
काज, राखो प्रभुजी म्हारो लाज । तुम सम जग माहि
नहीं कोय, तुम भजवाथी शाता होय ॥ १२ ॥ तुम
पास चले नहीं मर को रोग, ताव तेजारो नाखे तोड,
मारि मिटाई कीधी प्रभु सत, तुज गुणनो नहीं आवे

अन्त ॥१३॥ तुमनें समरे साधु सती, तुमने समरे जोगी जती। काटो संकट राखो मान, अविचल पद-नुंआयो थान ॥ १४ ॥ संवत अठारह चोराणु जाण, देश मालवो अधिक बखाण। शहर जावरा चैतर मास, हुँ प्रभु तुम चरणों का दास ॥ १५ ॥ ऋषि रूगनाथ जो कीधो छन्द, काटो प्रभुजी म्हारा फन्द। हूं जोऊं प्रभुजी नी बाट, मुझ आरति चिंता सब काट ॥ १६ ॥ इति

श्री गौतम स्वामी छन्द।

वीर जिनसर केरो सीस, गौतम नाम जपो निस दीस। जो कीजे गौतम नो ध्यान, तो घर विलसे नवे निधान ॥१॥ गौतम नामे गयबर चढ़े, मनवछित लीला संपजे। गौतम नामे नावे रोग, गौतम नामे सर्व संयोग ॥ २ ॥ जे बैरी बिरुवा वांकड़ा, तस नामे नावे टूकड़ा। भूत प्रेत नवि मंडे प्राण, ते गौतमना करूँ बखान ॥ ३ ॥ गौतम नामे निरमळ काय, गौतम नामे वाधे आय। गौतम जिन शासन सिणगार, गौतम

नामे जय जयकार ॥ ४ ॥ साल दाल सुहरा घृत गोल, मनवछित कापड तबोल । घरे सुघरणी निरमल चित्त गौतम नामे पूत विनीत ॥५॥ गौतम उदयो अविचल भाण, गौतम नाम जपो जगभाण । मोह माया मन्दिर मेरु समान, गौतम नामे सफल बिहाण ॥६॥ घर गय गल घोडा नी जोड, वारु पहुँचे वाछित कोड । महिल माने मोटा राय, जो तूठे गौतम ना पाय ॥७॥ गौतम प्रणम्या पातक टले, उत्तम नर नी सगति मले । गौतम नामे निरमल ज्ञान, गौतम नामे वाधे वान ॥ ८ ॥ पुण्यवन्त अवधारो सहु, गुरु गौतम ना गुण छे बहु । कहे लावन्य समय कर जोड, गौतम तूठे सम्पत क्रोड ॥ ९ ॥

श्री गौतम स्वामी छन्द ।

प्रह उठी नित प्रणमिये गुणवन्ता, गौतम गणधर वर गुर्वर नामे, भलो गाव, सोहे देश मगध मझार द्विज वसुभूति ने घरें तिहा लिनो उत्तम अवतार ॥ १ ॥ पृथ्वी माता जन्मया तनु सोहे, सुन्दर

सुकुमार, गौतम गोत्र विराजता नाम थाप्यो इन्द्र भूति उदार ॥२॥ सोवन वरण सुहावणो तनु उचोकर सात निहाल, श्री महावीर जिणंद के पटधारी पहला गणधर ॥ ३ ॥ वानुवरष को आउखो प्रभु पहुँता मुक्ति मझार, नाम लिये सुख संपजे दुःख जावे दोहग दूर पुलाय ॥४॥ पदसेवा गुरु राय की पुण्य योगे पाये नर नार साधु क्षमा कल्याण की नित हो जो वन्दना बारम्बार ॥ ५ ॥ इति

श्री सोलह सती छन्द ।

आदिनाथ आदि जिनवर वंदी सफल मनोरथ कीजिये ए । प्रभात उठे मंगलिक कामे सोले सती नाम लीजिये ए ॥ १ ॥ बालकुमारी जगहितकारी, ब्राह्मी भरतनी बेनडीरा । घट घट व्यापक अक्षयरूपे, सोले सती मांहे जेबड़ी ए ॥ २ ॥ बाहूवली भगनी सतिय शिरोमणि सुन्दरी नामे रिषभ सुता ए । अंगे स्वरूपी त्रिभुवन मांहे, जेह अनुपम गुणमुता ए ॥३॥ चन्दनबाला बाल पणाथी, शीयलवती शुधश्राविकाए ।

उड़दना बाकुला बीरे पडिलाभ्या, केवल लही व्रत भाविका ए ॥४॥ उग्रसेन सुता धारणी नदनी, राज-मती नेमवल्लाभाए । जीवन में सेक म ने जीत्यो, सगम लही देव दुल्लभाए ॥५॥ पच भरतारी पाडव नारी, द्रुपद तनया बखानिये ए । एक सौ आठे चीर पुराण, सीयल महिमा सुयश जाणिये ए ॥६॥ दशरथ नृप नी नारी निरुपम कौशल्या कुलचन्द्रिका ए । शीयल सजनी राम जनिता, पुण्यमणि परनालिका ए ॥ ७ ॥ कोसीवक ठामे सतनीक नामे, राज करे रंग-राजियो ए । तिस घर घरणी मृगावती सती, सुरभुवने जस गाजियो ए ॥ ८ ॥ सुलसा साची शियल न काची, राची नहीं विषया रसे ए । मुखडा जोता पाप पुलावे, नाम लेतां मन हुलसे ए ॥ ९ ॥ राम रघुवंशी जेहनी कामिनी, जनक सुता सीता सतीए । जग सहु जाणे धीज करंता, अनल सीतल थयो शीलथी ए ॥ १० ॥ काचे तांतणे चालनी बाधी, कुंआ थकी जल काढियो ए । कलंक उतारवा सतिय सुभद्रा, चपा पोल उघाडियो ए ॥ ११ ॥ सुर नर वन्दित शियल

卐 卐

अखण्डित, शिवा शिवपदगामिनीए। जेहने नामे निरमल थइये, बलिहारी तस नामिनी ए ॥ १२ ॥ हस्तिनागपुरे पाण्डु रानी, कुंतीनामे कामिनी ए। पांडव माता दसे दसा रवी, बहिन पतिव्रता पदमनी ए ॥ १३ ॥ शीलवती नामे शीलव्रती नाम से शीलव्रत धरिणी, त्रिविधे तेहने वन्दिये ए। नाम जपन्तां पातक जावे दर्शन दुरित निकन्दिये ए ॥१४॥ निषिधा नगरी नल नरिन्दनी, दमयन्ती तस गेहनी ए। सङ्कट पड़तां शीयल राख्यो त्रिभुवन कीरति जेहनी ए ।१५। अनङ्ग अजीता जगजन पुनीता, पुष्प चूला ने प्रभा-वती ए। विश्व विख्याता कामित दाता, सोलमी सती पद्मावती ए ॥ १६ ॥ सतियन नामा मन अभिरामा, दुःख दोहग कुं हरता ए। भवियण त्राता सिद्धियन दाता, ऋद्धियन कर्ता गुणे युता ए ॥१७॥ बीरे भाषी शास्त्रे साखी, उदय रतन भाषे मुदा ए। प्रभातेऊठि जे नर भणसे, ते लहसे सुख सम्पदा ए ॥ १७ ॥

卐 卐

श्री नाकोडा जी जिन स्तवन।

अपने घर बैठा लीला करो, निज पुत्र कलत्र सु प्रेम धरो। तुम देश देशान्तर काई दोडो, नित्य नाम जपो श्री नाकोडो ॥ १ ॥ मन वछित सगली आस फले, सर ऊपर चामर छत्र ढले। आगल चाले जल २ घोडो। नित० ॥२॥ भूत नें प्रेत पिशाच वली शाकण ने डाकण जाय टली। छल छिद्र ने लागे काई कोडो ॥ नित० ॥३॥ एकान्तर ताव सियो दाऊ, औषध बिन जाय थइ नाऊ। नवि दूखे माथा प्रग गोडो ॥ नित० ॥ ४ ॥ कठमाला गड गुम्बड सगला, व्रण कुमर रोग टले सवला। पीडा न करे फणगण फोडो ॥ नित० ॥ ५ ॥ तू जागतो तीरथ पास पहु, तुमे जाने सगलो जगत सहु ततक्षण अशुभ करम तोडो ॥ नित० ॥६॥ श्रीपास महेवापुर नगरे, मैं भेठ्या जिनवर हरख भरे। समय सुन्दर कहे गुण जोडो ॥ नित० ॥ ७ ॥

卐 卐

श्री नवकार स्तवन ।

श्री नवकार जपो मन रंगे, श्रीजिनशासन सारुरी माई । सर्व मंगल मांहे पहलो मंगल जपतां जय जयकार री माई ॥ श्रीनव० ॥ १॥ पहले पद त्रिभुवन जन पूजित, प्रणमूं श्री अरिहंतरी माई । अष्ट करम वरजित बीजे पद,ध्यावो सिद्ध अनन्त री माई ॥श्रीनव॥ ॥२॥ अचारज तीजे पद सुमरो, गुण छत्तीस निधान री माई । चौथे पद उवझाय जपीजे,सूत्र सिद्धांत सुजाण री माई ॥ श्रीनव० ॥ ३ ॥ सर्व साधु पंचम पद प्रणमूं, पंच महाव्रत धार री माई। नवपद अष्ट इहांछे संपदअडसठ वरण संभार री माई ॥ श्रीनव: ॥४॥ सात यहां गुरु अक्षर एहना,एक अक्षर उच्चार री माई । सात सागर ना पातिक जाये,पद पचास विचार री माई ॥ श्रीनव. ॥ ५ ॥ संपूरण पणसे सागर ना, पाप पुलावे दूर री माई । इह मन क्षेम कुशल भव वंछित, पर भव सुख भरपूर री माई ॥ श्रीनव० ॥ ६॥ रतिवर सोवन पोरसी सिधो, शिवकुमार इण ध्यान री माई । सर्प

छोड हुई फूलमाला, श्रीमति ने परधान री माई ॥ श्रीनव ॥ ७ ॥ इति उपद्रव करतो निवारयो, परघो इहा पर सिद्ध री माई ॥ श्रीनव ॥ ८ ॥ चोर खड़ पीगल ने हुडक । पामे सुर नर रिद्धरी माई ॥ श्रीनव० ॥ ९ ॥ पंच परमेष्टी जग मे उतम, चवदे पूरव सार री माई । गुण बोले श्री पदमराज जसु, महिमा अपर-पार री माई ॥ श्रीनव० ॥ १० ॥

श्री चिन्तामणि पास स्तवन ।

आणी मनसुध आसाता, देव जुहारू सासता । पारसनाथ मनवछित पूर चिन्ता मणि म्हारि चिन्ता चूर ॥ १ ॥ अणियाली तोरी आखडी, जाने कमल तणी पाखडी । सुखदीखे दुख जावे दूर ॥ चिन्ता ॥२॥ दूजो तो को केहने नमे, माहरे मन मे तुहिज रमे । सदा जुहारूं उगते सूर ॥ चिन्ता ॥ ३ ॥ मुंज मन लागो तुम सू प्रीत दूजो कोई न आवे चित्त । कर मुझ तेज प्रताप पडूर ॥ चिन्ता० ॥ ४ ॥ बीछडिया वालेसर मिला, बेरी दुश्मन पाछा ठिला । तूछे माहरे

हाजरो हजूर ॥ चिन्ता ॥५॥ एह स्तोत्र मनमें जेधरे तेहना चिन्त्या कारज सरे आधि व्याधि दुख जावे दूर ॥ चिन्ता० ॥ ६ ॥ भव भव होज्यो तुम पाय सेवा, श्री चिन्तामणि अरिहंत देव । समय सुन्दर कहे सुख भरपूर ॥ चिन्ता० ॥ ७ ॥

श्री गौतमाष्टक ।

प्रह उठी गौतम प्रणमीजे,मन वंछित फल नो दातार । लब्धि निधान सकल गुण सागर, श्रीवर्धमान प्रथम गणधार ॥ प्रह० ॥ १ ॥ गौतम गोत्र चवद विद्यानिधि,पथिवी मात पिता वसुभूत । जिनवर वाणि सुनि मन हरख्यो, बोलाव्यो नामे इन्द्रभूत ॥ प्रह० ॥ २ ॥ पंच महाव्रत लहो प्रभू पासे, द्यें त्रिपदो जिनवर मनरंग । श्री गौतम गणधर तहां गूंथ्यां, पूरब चवद दुवालस अंग ॥प्रह. ३ ॥ लब्धे अष्टापद गिरी चढ़िया, चैत्य वन्दन जिनवर चोबीस । नरे से तोहोतर तापस, प्रतिबोधी कीधा निज सीस ॥ प्रह. ॥ ४ ॥ अदभुत एह सद्गुरुनो अतिशय,जसु दिखे तसु केवल ज्ञान । जावजीव

तप पारणो, आपण गोचरी में धर्मध्यान ॥ प्रह ॥५॥ कामधेनु सुर तरु चिंतामणी, नाम माहे सेज करेरे निवास । ते सद्गुरु नो ध्यान धरंता, लाभे लक्ष्मी लील विलास ॥ प्रह ॥ ६ ॥ लाभ घणोविणजे व्यापारे, आवे प्रवहण कुशले क्षेम श्री सद्गुरु नो नाम जपता पामे पुत्र कलत्र बहु प्रेम ॥ प्रह० ७ ॥ गोतम स्वामी तणा गुण गाता, अष्ट महासिद्धि नवे रे निधान । समय सुन्दर कहै सुगुरु प्रसादे । पुन्य उदय प्रगट्यो परधान ।प्रह।८

वृद्ध णमोक्कार स्तोत्र

कि कप्पत्तरु रे अयाण, चितउ मणभितरि । किं चितामणि कामधेनु, आराहो बहुपरि ॥ चित्ताबेली काज किसे, देसान्तर लघउ । रयणरासि कारण किसे, सायर उल्लउ ॥ १ ॥ चवदे पूरब सार युग लद्धउ ए णवकार । सयल काज महियल सरे, दुत्तर तरे ससार ॥ केवलि भासिय रीत जिके, नवकार आराहे । भोगवि सुक्ख अणंत, अन्त परम प्पय साहे ॥ २ ॥ इण भाणे सुर ऋद्धि पुत्त, सुह विलसे बहु परि । इण भाणे सुर-

लोक इन्द, पद पामे सुन्दरी ॥ एह मंत्र सासतो जपे, अचिंत चिंतामणि एह । समरण पाप सवे टले, ऋद्धि सिद्धि णियगेह ॥ ३ ॥ णिय सिर ऊपर झाण, मज्झ चिंतवे कमल नर । कंचणमय अठदल सहित, तिहां मांहे कनकवर ॥ तिहां बैठा अरिहत देव, पउमासण फिटकमणि । सेय वत्थ पहेरेवि पढ़म पय चिंते णिय-मणि ॥ ४ ॥ णिव्वारय चउ गई गमण, पामिय सासय सुक्ख । अरिहंत झाणे तुम लहो, जिम अजरामर मुक्ख, पनर भेय तिहां सिद्ध बीय पद जे आराहे । राते विद्रु मत्रणे वणणिय सोहग साहे ॥ ५ ॥ राती धोवत पहर जपें, सिद्धहिं पुव्वे दिसी । सयल लोय तिह नर ही होइ ततखिण सेंवसि ॥ मूल मंत्र वसीकरण, अवर सहू जग-धंध । मणमूली ओषध करे बुद्धिहीण जाचंद्य ॥ ६ ॥ दक्षिण दिसि पत्रड़ी जपे नमो आयरिआणं । सोवण-वण्हं ॥ सीससहित उवए सहिणाणं ॥ ऋद्ध सिद्ध कारणे लाभ ऊपर जे ध्यावे । पहरे पीलावत्थ तेह, मण वंछिय पावे ॥ ७ ॥ इण झाणे णवणिधि हूवे, ए रोग कदे णवि होय । गय रह हय वर पालखी, चामर छत्र सिर जोय ॥ णीलवण्ण उवझाव, सीस पाढता पच्छिम ।

दिस पखडीय कमल ऊपर सुहझाण। जोवी परमानन्द तासु गय' वेवचिमाण ॥ गुरु लघु जे रखे बिदुर तिहा नर बहु फल होई। मन सूघे विण जे जपे, तिहा फल सिद्ध ण जोई ॥९॥ सव्व साधु उत्तर विमाग सामला बइठा। जिण धर्म लोय मयासयत चारित्र गुण जिट्ठा। मण-वयण काएहिं जपे जे एके झाणे। पंचवण्ण तिहा णाण झाण, गुण एह- प्रमाणे ॥१०॥ अनन्त चोबीस जग हूए होसी अबर अणत। आदि कोई जाणी नहीं, इण नवकारह मत-॥ एसो-पच नमुक्कारो, पद दिसिअ गणेही, सव्व- पावप्पणासणो,- पद जपणेरेहि ॥११॥ बायद दिसि झाएह, मगलाणं च सव्वेसिं। पढम हवई मगल ईसाण पएसि ॥ चिहु दिसि विदिसे मिलिय,अठ दल अमल ठवेइ। जो गुरु लघु जाणो जपे, सो घण पाब खवेइ ॥१२॥ इण प्रभाव घरणिद हुओ, पाया-लह-सामी। समली कुमर उपण्ण भिल्ल, सुर लोयह गामी सबल कवल बे बलद पहुता देवा कप्पे सूली दीधो चोर देव थयो नवकार हि जप्पे ॥ १३ ॥ शिवकुमार मण- वछिय करे, जोगी लियो मसाण। सोंनापुरसो सीधलो, इण नवकार प्रमाण॥ छींके बैठो चोर एक

आकासेगामी । अहि फिट्टि हुई फूल माल नवकारह णामी ॥ १४ ॥ वाछरुआ चारंत बाल, जल नदी प्रवाहे । बोध्यों कंटहि उयर मन्त्र, जपियो मन मांहे ॥ चिंत्या काज सवे सरे,ईरत परत विमास । पालित्त सूरि-तणी परे, विद्या सिद्ध आकाश ॥ १५ ॥ चोर धाड़ संकट टले, राजा बसि होवे । तित्थंकर सो होई,लाखं गुण विधिसूं जोवे ॥ साइण डाइण भूत प्रेत, वेताल न पोहवे । आधि व्याधि ग्रहतणी पीडते, किम्हि न होवे ॥ १६ ॥ कुट्ठ जलोदर रोग सवे नासे एणही मंत । मयणा सुन्दारतणी परे णव पय झाण करंत ॥ एक जीहें इण मन्त्रतणा, गुण किता बखाणूं । णणहीण छउमत्थ एह, गुण पार न जाणूं ॥ १७ ॥ जिम सन्तुजय तित्थ-राय, महिमा उदवतो । सयल मंत्र धुरि एह मन्त्र राजा जयवन्तो ॥ तित्थंकर गणहर पंणिय, चवदह पूरव सार । इण गुण अनन्त को कहे,गुण गिरबो णमोवकार ॥१८॥ अडसंपय नव पय सहित,इ गमठ लहु अक्खर । गुरु अक्खर सत्तोव, इह जाणो परमक्खर ॥ गुरु जिण वल्लह सूरि भणे, सिव सुक्खह कारण । णरय तिरय

गयरोग सोग, बहु दुख निवारण ।१९। जलथल महियल बणगहण, समरण, हुए इक चित्त । पंच परमेष्ठि मंत्रह तणी, सेवा द्यो नित ॥२०॥

श्री शत्रुंजय रास

॥ दोहा ॥

श्री रिसहेसर पाय नमो, आणी मन आनन्द । रास भणू रलियामणो, शत्रुञ्ज सुख कंद ॥१॥ संवत् चार सतोतरें, हुए धनेश्वर सूरि । तिण शत्रुञ्जय महातम कियो, शिला दित्य हजूर ॥२॥ वीर जिनन्द समवसर्या, शत्रुञ्जय ऊपर जेम । इन्द्रादिक आगल कह्यो, शत्रुञ्जय महातम एम ॥३॥ शत्रुञ्जय तीरथ सरिखो, नहीं छे तीरथ कोय । स्वर्ग मृत्यु पाताल में तीरथ सगला जोय ॥४॥ नामे नव निधि संपजे, दीठा दुरित पुलाय । भेटता भव भय टले, सेवता सुख थाय ॥५॥ जम्बू नामे दीपए, दक्षिण भरत मझार । सोरठ देश सुहामणो, तिहा छे तीरथ सार ॥६॥

॥ राग रामगिरी ॥

शत्रुञ्जय ने श्री पुण्डरीक, सिद्धक्षेत्र कहू तहतीक

विमलाचलने करूं परणाम, ए शत्रुजंयना इकवीस नाम ॥१॥ सुरगिरने महागिरि पुण्य राश, श्री पद पर्व्वत इन्द्र प्रकाश। महा तीरथ पूरवे सुख काम ए. ॥२॥ सासतो पर्वतने दृढ शक्ति मुक्ति निलो तिण कीजे भक्ति। पुष्पदन्त महापद्मसु सुठाम ए. ॥३॥ पृथ्वी पीठ सुभद्र कैलाश, पाताल मूल अकर्मक ताश। सर्व काम कीजे गुण ग्राम ॥४॥ श्री शत्रुजंयना इकवीस नाम, जपेजे बैठा अपने ठाम। शत्रुजंयना इकवीस नाम, जपेजे बैठा अपने ठाम। शत्रुजंय यात्रानो फल लहे, महावीर भगवन्त इस कहे ॥५॥।

॥ दोहा ॥

शत्रुजंय पहले अरे, अस्सी जोयण परिमान। पहुलो मूल ऊंचोपणे छव्वीस जोयण जांण ॥१॥ सत्तर जोयण जांणवो, बीजे अरे विसाल। वीस जोयण ऊंचो कह्यो, मुझ बन्दता त्रिकाल ॥२॥ साठ जोयण तीजे अरे, पहिलो तीरथ राय। सोल जोयण ऊंचो सही, ध्यान धरूं चित्त लाय ॥३॥ पचास जोयण पिहुलपण चौथे अरे मझार। ऊंचो दस जोयण अचल, नित प्रणमें नर नार ॥४॥ बार जोयण पंचम अरे, मूल तणे विस्तार। दो जोयण

मूल तणे विस्तार । दो जोयण ऊचो अछे, शत्रुञ्जय तीरथ सार ॥५॥ सात हाथ छट्ठे आरे, पिहुलो परवत एह ।ऊचो होसी सौ धनुष, सासतो तीरथ एह ॥ ६॥

॥ ढाल ॥

केवल ज्ञानी प्रमुख तीर्थंकर,अनन्त सीधा इण ठाम रे । अनन्त वली सिझस्ये इण ठामे,तिन करू नित परनाम रे ।१।शत्रुजय साधु अनन्ता सीधा,सीझसी वलिय अनन्त रे । जिन शत्रुञ्जय तीरथ नहिं भेटियो, ते गर-भावास कहन्त रे ॥ श० २ ॥ फागुन सुद्धि आठमने दिवसे, ऋषभदेव सुखकार रे । रायणरुंख समवसरया स्वामी, पूर्व निनाण वार रे ॥ ३ ॥ भरत पुत्र चैत्री पूनम दिन इण शत्रुञ्जय गिरी आय रे । पांच कोडो सू पुण्डरीक सीधा,तिन पुण्डरीक नाम कहाय रे ॥४॥ नमि विनमी राजा विद्याधर, वे बे कोडी सघात रे । फागुन सुदि दशमी दिन सीधा, तिण प्रणमू परभात रे ॥ ५ ॥ चैत मास वदि चौदस ने दिन, नमि पुत्री चउ-सट्टि रे । अणसण कर शत्रुञ्जय गिरि ऊपर, ए सहु सीधा एकट्ठि रे ॥ ६ ॥ पोतरा प्रथम तीर्थंकर केरा, द्राविडने वारिखिल्ल रे । काती सुदि पूनम दिन सीधा
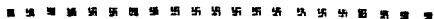
दश कोडी सूं मुनि सिल्ल रे ॥ ७ ॥ पांचे पांडव इण गिर सीधा नव नारद ऋषिराय रे । सांव प्रदुमन गया इहां मुगते आठे कर्म खपाय रे ॥ ८ ॥ नेमी विना तेवीस तीर्थंकर समवसर या गिरि शृङ्ग रे । अजित शान्ति तीर्थंकर वेहूं रह्या चौमासे सुरंग रे ॥ ९ ॥ सहस साधु परिवार संघाते. थावच्चा सुख साध रे । पांच से साधु सेलग मुनिवर. शत्रुजंय शिव सुख लाध रे ॥ १० ॥ असंख्याता मुनि शत्रुज्जय सीधा भरतेसरने पांट रे । राम अने भरतादिक सीधा. मुक्ति तणी ए वाट रे ॥ ११ ॥ जालि मयालीने उवयाली. प्रमुख साधुनो कोडि. रे । साधु अनन्ता शत्रुजय सीधा. प्रणमूं बे करजोड़ि रे ॥ १२ ॥

॥ ढाल ॥

शत्रुजंय ना कहुं सोल उद्धार ते सुणज्यो सहुको सुविचार । सुनता आनन्द अंग न माय,जनम जनमना पातक जाय ॥ १ ॥ ऋषभदेव अयोध्यापुरी, समवसर या स्वामी हित करी । भरत गयो वन्दनने काज,ए उपदेश दियो जिनराज ॥ २ ॥ जग मांहें मोटा अरिहन्त देव, चौसठ इन्द्र करे जसु सेव । तेहथी मोटो संघ

कहाय, जेहने प्रणमें जिनवर राय ॥३॥ तेहथी मोटो सघवी कह्यो, भरत सुनीने मन गह गह्यो भरत कहे ते किम पामिये, प्रभु कहे शत्रुंजय यात्रा किये ॥ ४ ॥ भरत कहे सघवीपद मुझ, थे आपो हु अङगज तुझ । इन्द्रे आण्या अक्षत वास, प्रभु आपे सघवी पद तास ॥ ५ ॥ इन्द्रे तिण वेला ततकाल, भरत सुभद्रा, बिहुने माल । पहिरावी घर, सपेडिया सकल, सोनाना रथ आपिया ॥ ६ ॥ ऋषभदेवनी प्रतिमा, वली, रत्न तणी दीधी मन रली । भरते गणधर घर तेडिया, शातिक पौष्टिक सहु तिहा किया ॥७॥ ककोत्री मूकी सहु देस, भरत तेडायो सघ असेस । आयो सघ अयोध्यापुरी, प्रथम तिर्थकर यात्रा करी ॥८॥ सघ भक्ति कीधी अति घणी, संघ चलायो शत्रुजय भणी, । गणधर बाहुबलि केवली, मुनिवर क्रोडी साथे लिया वली ॥९॥ चक्रवर्त्तिनी सघली ऋद्धि, भरते साथे लीधी सिद्धी । हयगय रथ पायक परिवार, ते तो कहता नावे पार ॥१०॥ भरतेसर सघवी कहवाय, मारग चैत्य उधरतो जाय । साघ आयो शत्रुजय पास सहुनी पूगी मननी आस ॥ ११ नयने निरख्यो शत्रुंजय राय, मणि माणिक

मोत्यांसू बधाय । तिण ठांमे रहि महोच्छव कियो, भरते आनन्द पुरवासियो ॥१२॥ संघ शत्रुजंय ऊपर चढ़यो,फरसता पातक झड़ पडयो केवल ज्ञानी पगला तिहां, प्रणम्यां रायण रूंख छे जिहां ॥ १३ ॥ केवल ज्ञानी स्नात्र निमित्त, ईशानेन्द्र आणी सुपवित्त । नदी शत्रुजंय सोहामनी, भरतें दीठी कौतुक भणी ॥१४॥ गणधर देव तने उपदेश,इन्द्रे वलि दीधो आदेश । आदिनाथ तनो देहरो, भरत करायो गिरिसेहरो ॥ १५ ॥ सोनानो प्रासाद उत्तंग, रतनतणी प्रतिमा मनरंग । भरतें श्री आदीसरतणी,प्रतिमा थापी सोहामणी ॥१६॥ मरुदेवानी प्रतिमा वली, माही पूनम थापी रली । ब्राम्ही सुन्दरि प्रमुख प्रासाद, भरते थाप्या नवले नाद ॥ १७ ॥ इम अनेक प्रतिमा प्रसाद, भरत कराया गुरु सुप्रसाद । भरत तणो पहिलो उद्धार सगलोही जाने संसार ॥ १८ ॥

॥ राग सिन्धोडो आशावरी ॥

भरत तने पाट आठ मे, शत्रुजंय संघवि कहायोजी ॥ १ ॥ शत्रुजंय उद्धार सांभलो, सोल मोटा श्री कारोजी असंख्यात बीजा वली,तेना कहूं अधिका-

रोजी ॥ से० ॥ २ ॥ चैत्य करायो रूपा तणो,सोनानो बिंब भंडारियो, पच्छिम दिशि तिण वारोजी ॥ से०॥ ३ ॥ सेत्रुञ्जेनी जात्रा करी,सफल कियो अवतारोजी। दंडवीरज राजा तणो, ए बीजो उद्धारोजी ॥ से० ॥ ४ ॥ सो सागरोपम व्यतिक्रम्या, दडवीरजथी जिवारोजी। ईशानेन्द्र करावियो, ए त्रीजो उद्धारोजी ॥से० ॥ ५ ॥ चोथा देवलोकनो धणी, माहेंद्र नाम उदारोजी तिण सेत्रुञ्जेनो करावीयो, ए चोथो उद्धारोजी ॥ से० ॥ ६ ॥ पाचमा देवलोकनो धणी, ब्रह्मेन्द्र समकित धारोजी। तिण सेत्रुञ्जेने करावियो,ए पाचमो उद्धारोजो। से० ॥ ७ ॥ भुवनपति इन्द्रनो कियो, ए छठो उद्धारोजी। चक्रवर्ति सगर तणो कियो, ए सातमो उद्धारोजी ॥ से० ॥ ८ ॥ अभिनंदन पासे सुण्यो, सेत्रुंजनो अधिकारोजी। व्यंतर इन्द्र करावियो,ए आठमो उद्धारोजी ॥ से० ॥ ९ ॥ चंद्रप्रभु स्वामीनो पोतरो, चंद्रशेखर नाम मल्हारोजी। चंद्रजसराय करावियो, ए नवमो उध्दारोजी ॥ से० ॥१०॥ शान्तिनाथनी सुणी देशना, शातिनाथ सुत सुविचारोजी ॥ से० ॥ ११ ॥ दशरथ सुत जगदीपतो, मुनिसुव्रत स्वामी वारोजी।

श्रीरामचंद्र करावियो, ए इग्यारमो उध्दारोजी ॥ से० ॥ १२ ॥ पांडव कहे अम्हे पापीया, किम छूटां मोरी मायोजी । कहे कुंती सेत्रुञ्जा तणी, यात्रा कियां पाप जायोजी ॥ से० ॥ १३ ॥ पांचे पांडव संघ करी, सेत्रुंज भेटयो अपारोजी । काष्ट चैत्य बिंब लेपना, ए बारमो उध्दारोजी ॥ से० ॥ १४ ॥ मम्माणी पाषाणनी,प्रतिमा सुन्दर सरूपोजी । श्री सेत्रुंजेनो संघ करी, थापी सकल स्वरूपोजी ॥ से०॥ १५ ॥ अट्ठोत्तर सो वरसां गया,विक्रम नृपथी जिवारोजी ।पोरवाड जावड कराविया, ए तेरमोउध्दारोजी ॥ से०॥ १६ ॥ संवत बार तिहोत्तरे,श्रीमाली सुविचारोजी ॥ वाहडदे मुहते कराविया, ए चौदमो उध्दारोजी ॥ से० ॥ १७ ॥ संवत तेरे इकोत्तरे,देसलहर अधिकारोजी । समरेशाह कराविया ए पनरमो उध्दारोजी से० ॥ १८ ॥ संवत पन्नर सत्यासीये, वैशाख वदि शुभवारोजी । करमे डोसी कराविया, ए सोलमो उध्दारोजी ॥ से०॥१९॥ संप्रतिकाले सोलमो,ए वरते छे उध्दारोजी । नित नित कीजे वंदना, पामीजे भव पारोजी ॥ से०॥ २७ ॥

दोहा—वली सेत्रुजे महातम कहु, साभलो जिम छे तेम । सूरि घनेसर इम कहे, महावीर कह्यो एम ॥ १ ॥ जेहवो तेहवो दरसणी, सेत्रुजे पूजनीक । भगवंतनो भेष मानता, लाभ हुवे तहतीक ॥ २ ॥ श्री सेत्रुजा ऊपरे,चैत्य करावे जेह । दलपरम.ण समो लहे, पल्योपम सुख तेह ॥ ३ ॥ सेत्रुजा ऊपर देहरो, नवो नोपजावे कोय । जीर्णोध्दार करावता आठ गुणो फल होय ॥ ४ ॥ सिर ऊपर गागर धरो, स्नात्र करावे नार । चक्रवर्त्तिनी स्त्री थई,शिव सुख पामे सार ॥५॥ काती पूनम सत्रुजे, चढीने करे उपवास । नारकी सौ सागर समो,करे करमनो नाश ॥६॥ काती परव मोटो कह्यो,जिहा सिध्दा दश कोड । ब्रह्म स्त्री बालक हत्या, पापथी नाखे छोड ॥७॥ सहस लाख श्रावक भणी, भोजन पुण्य विशेष । सेत्रुजे साधु पडिलाभता,अधिको तेहथी देख ॥ ८ ॥

ढाल पाचमी—धन-धन अयवंती सुकुमालने, एदेशी— सेत्रुन्जे गया पाप छूटिये, लीजे आलोयण एमोजी । तप जप कीजे तिहा रही, तीर्थंकर कह्यो तेमोजी ॥ १ ॥ जिण सोनानी चोरी करी, ए आलो-

यण तासोजी । चत्री दिन सेत्रुंजे चढ़ी, एक करे उपवासोजी ॥ से० ॥ २ ॥ वस्तु तणी चोरी करी,सात आंबिल शुध्द थायोजी । काती सात दिन तप कियां, रतन हरण पाप जायोजी ॥ से०॥ ३ ॥ कांसी पीतल तांबा रजतनी, चोरी कीधी जेणोजी । सात दिवस पुरिमढ करे, तो छूटे गिरि एणोजी ॥ से० ४ ॥ मोती प्रवाला मूंगीया, जिण चोर्या नर नारीजी । आंबिल कर पूजा करे, त्रण टंक शुध्द आचारीजी ॥ से० ५॥ धान पाणी रस चोरिया, जे भेटे सिध्दक्षेत्रोजी । सेत्रुंजे तलहटी साधुने, पडिलाभे शुध्द चितोजी ॥ से० ॥६॥ वस्त्राभरण जिणें हर्या,ते छूटे इण मेलोजी । आदिनाथनी पूजा करें. प्रह ऊठी वहु वेलोजी ॥से० ७ ॥ देव गुरुनो धन जे हरे. ते शुध्द थाये एमोजी । अधिको द्रव्य खरचे तिहां. पात्र पोषे वहु प्रेमोजी ॥ से० ८ ॥ गाय भैंस घोड़ा मही.गजनो चोरणहारोजी दीयो ते वस्तु तीरथे. अरिहन्त ध्यान प्रकारोजी ॥ से० ९ ॥ पुस्तक देहरा पारका. तिहां लिखे आपणो नामोजी । छूटे छम्मासी तप कियां. सामायिक तिण ठामोजी ॥ १० ॥ कुंवारी परिव्राजिका. सधव अधव

यण तासोजी । चैती दिन सेत्रुञ्जे चढी, एक करे उप-
वासोजी ॥ से० २ ॥ वस्तु तणी चोरी करी, सात
आबिल शुद्ध थायोजी । काती सात दिन तप किया,
रतन हरण पाप जायोजी ॥ से० ३ ॥ कासी पीतल
तावा रजतनी, चोरी कीधी जेणोजी । सात दिवस
पुरिमढ करे; तो छूटे गिरि एणोजी ॥ से ४ ॥ मोती
प्रवाला मूगीया, जिण चोर्या नर नारोजी । आबिल कर
पूजा करे, त्रण टक शुद्ध आचारोजी ॥ से० ५ ॥ धान
पाणी रस चोरिया, जे भेटे सिद्धक्षेत्रोजी । सेत्रुजे तल-
हटी साधुने, पडिलाभे शुद्ध चित्तोजी ॥ से० ६ ॥
वस्त्राभरण जिणें हर्या, ते छूटे इण मेलोजी । आदिनाथनो
पूजा करे; प्रह ऊठी बहु वेलोजी ॥ से. ७ ॥ देव गुरुनो
धन जें हरे, तें शुद्ध थाये एमोजी । अधिको द्रव्य खरचे
तिहा, पात्र पोपे बहु प्रेमोजी ॥ से० ८ ॥ गाय भैंस
घोडा मही, गजनो चोरणहारोजी । दीये ते वस्तु
तीरथे, अरिहन्त ध्यान प्रकारोजी ॥ से० ९ ॥ पुस्तक
देहरा पारका, तिहा लिखे आपणो नामोजी । छूटे
छम्मासी तप किया, सामायिक तिण ठामोजी ॥ से०

卐 卐

से. ॥ १४ ॥ सूरजकुंड निहालिये ए. अति भली उल-
काझोल ॥ से. ॥ चेलणा तलाई सिध्दाशिला ए, अंग
फरसुं उल्लोल ॥ से. ॥ १५ ॥ आदिपुर पाजे उतरुं
ए, सिध्दवड लूं विसराम ॥ से. ॥ चैत्य वाडि इण-
परि करी ए, सीधां वांछित काम ॥ से. ॥ १६ ॥
जात्रा करी सेत्रुंजा तणी ए. सफल कियो अवतार ॥
से. ॥ कुसल खेमसुं आवियो ए. संघ सहु परिवार ॥
से. ॥ १७ ॥ सेत्रुंजरास सोहामणो ए. सांभलज्यो
सहु कोय ॥ से. ॥ घर बेठां भणे भावसुं ए, तसु जात्रा
फल होय ॥ से. ॥ १८ ॥ संवत सोल बयासीये ए.
सावण वदि सुखकार ॥ से. ॥ रास भण्यो सेत्रुंजा
तणो ए, नगर नागोर मझार ॥ से. ॥ १९ ॥ गिरुवो
गच्छ खरतर तणो ए. श्रीजिणचन्दसूरीस ॥ से. ॥
प्रथम शिष्य श्रीपूजाना ए. सकलचन्द सुजग स ॥से.॥
॥ २० ॥ तास शिष्य जग जाणीये ए. समयसुन्दर उव-
ज्झाय ॥ से ॥ रास रच्यो तिण रूवडो ए. सुणतां
आणंद थाय ॥ से ॥ २१ ॥ इति ॥

श्री गौतमस्वामीजी का रास।

वीर जिणेसर चरण कमल, कमला कय वासो, पणमिवि पभणिसु सामीसाल गोयम गुरु रासो। मण तणु वयण एकत करिवि, निसुणहु भो भविया, जिम निवसे तुम देह गेह गुण गण गहगहिया ॥ १ ॥ जंबूदीव सिरी भरहखित्त खोणी तल मंडण, मगह देश सेणिय नरेश, रिऊ दल बल खंडण। धणवर गुव्वर गाम नाम, जिहां गुण गण सज्जा, विप्प वसे वसुभूइ, तत्थ, तसु पुहवी भज्जा ॥ २ ॥ ताण पुत सिरि इन्द्रभूइ, भूवलय पसिध्दो, चउदह विज्जा विविह रूव, नारी रस लुध्दो। विनय विवेक विचार सार, गुण गणह मनोहर, सात हाथ सुप्रमाण देह, रूवहि रंभावर ॥ ३ ॥ नयणे वयण कर चरण जगवि, पंकज जल पाडिय, तेजहि तारा चन्द सूर, आकाश भमाडिय। रूवहि मयण अनंग करवि, मल्यो निरधाडिय, धीरम मेरु गंभीर सिंधु, चंगम चय चाडिय ॥ ४ ॥ पेक्खवि निरुवम रूव जास, जण जंपे किंचिय, एकाकी किल भीत्त इत्थ, गुण मेल्हा संचिय। अहवा निच्चय पुव्व

जम्म, जिणवर इण अंचिय, रंभा पउमा गउरी गंग, तिहां विधि वंचिय ॥ ५ ॥ नय बुध नय गुरु कविण कोय, जसु आगल रहियो, पंचसयां गुण पात्र छात्र, हींडे परवरियो । करय निरंतर यज्ञ करम, मिथ्यामति मोहिय, अणचल होसे चरम नाण, दंसणह विसोहिय ॥ ६ ॥ वस्तु ॥ जंबूदीव जंबूदीय भरह वासंमि खोणी-तल मंडण मगह देस सेणिय नरेसर, वर गुव्वर गाम तिहां, विप्प वसे वसुभूइ सुन्दर, तसु पुहवि भज्जा, सयल गुण गण रूव निहाण, ताण पुत्त विज्जानिलो, गोयम अतिहि सुज्ञाण ॥ ७ ॥ भास ॥ चरम जिणेसर केवल-नाणी, चौविह संघ पइट्ठा जाणी । पावापुर सामी संपत्तो, चउविह देव निकायहिं जुत्तो ॥ ८ ॥ देवहि समवसरण तिहां कीजे, जिन दीठे मिथ्यामत छीजे । त्रिभुवन गुरु सिंहासन बेठा, तत खण मोह दिगंत पइट्ठा ॥ ९ ॥ क्रोध मान माया मद पूरा, जाये नाठा जिम दिन चोरा देव दुंदुभि आगासें वाजी, धरम नरेसर आव्यो गाजी ॥ १० ॥ कुसुम वृष्टि अरचे तिहां देवा, चउसठ इन्द्रज मांगे सेवा । चामर छत्र सिरीवरि सोहे, रूवहि जिनवर जग सहु मोहे ॥ ११ ॥ उपसम रसभर

वर वरसता, जोजन वाणी वखाण करता । जाणवि वर्द्धमान जिण पाया सुरनर किन्नर आवइ राया॥१२॥ कत समोहिय जलहलकता, गयण विमाणहि रणरणकता पेक्खवि इन्द्रभूइ मन चिते, सुर आवे अम यज्ञ हुवते ॥१३॥ तीर तरङ्क जिम ते बहिता, समवसरण पुहता गहगहिता तो अभिमानें गोयम जपे, इण अवसर कोपें तणुकपे ॥ १४ ॥ मूढा लोक अजाण्यु बोले, सुर जाणता इम काइ डोले । मो आगल कोई जाण भणीजे, मेरु अवर किम उपमा दीजे ॥ १५ ॥ वस्तु ॥ वीर जिणवर वीर जिनवर नाण सपन्न पावापुर सुरमहिय, पत्त नाह संसारतारण, तिहि देवइ निम्महिय, समवसरण बहु सुक्ख कारण, जिणवर जग उज्जोय करे, तेजहि कर दिनकर। सिहासण सामी ठव्यो, हुओ तो जय जयकार ॥ १६ ॥ भास ॥ तो चढियो घणमाण गजे, इन्दभूइ भूयदेव तो, हुकारो कर सचरिय कवणसु जिणवर देव तो । जोजन भूमि समोसरण पेक्खवि प्रथमारभ तो दह दिस देखे विबुध वधू आवती सुररम तो ॥ १७ ॥ मनिमय तोरण दड ध्वज कोसीसे नवघाट तो वइर विवर्जित जतुगण. प्रातीहारिज आठ तो । सुर नर किन्नर असुरवर. इंद्र इद्राणी राय तो. चित्त

समकित चिंतवए. सेवंता प्रभु पाय तो ॥ १८ ॥
सहसकिरण सामी वीरजिण. पेखिअ रूप विसाल तो,
एह असंभव संभव ए. साचो ए इंद्रजाल तो। तो बोला-
वइ त्रिजग गुरु. इंद्रभूइ नामेण तो. श्रीमुख संसय सामी
सवे. फेडे वेद पएण तो ॥ १९ ॥ मान मेलि मद ठेलि
करी, भगतिहिं नाम्यो सीस तो. पंचसयांसु व्रत लियो
ए गोयम पहिलो सीस तो। बंधव संजम सुणिवि करी
अगनिभूइ आवेय तो. नाम लेई आभास करे. ते पण
प्रतिबोधेय तो ॥ २० ॥ इण अनुक्रम गणहर रयण,
थाप्या वीर इग्यार तो, तो उपदेसे भुवनगुरु. संयमशुं
व्रत बार तो। बिहुं उपवासें पारणो ए. आपणपें विह-
रंत तो. गोयम संयम जग सयल जय जयकार करंत
तो ॥२१॥वस्तु॥ इंद्रभूइ इंद्रभूइचढियो बहुमान, हुंकारो
करि कंपतो. समवसरण पहूतो तुरंतो जे संसा सामि
सवे. चरमनाह फेडे फुरंत तो. बोधिबीज संजाय मनें.
गोयम भवहि विरत्त। दिक्ख लेई सिक्खा सही. गण-
हर पय संपत्त ॥ २२ ॥ भास। आज हुओ सुविहाण.
आज पचेलिमां पुण्य भरो. दीठा गोयम सामि जो
निय नयणें अमिय सरो। समवसरण मझार. जे जे संसय

ऊपजे ए ते ते पर उपगार कारण पूछे मुनि पवरो ॥ २३ ॥ जिहा जिहा दीजे दीख. तिहा तिहा केवल ऊपजे ए आप कनें अणहुत गोयम दीजे दान इम । गुरु ऊपर गुरु भक्ति सामी गोयमे ऊपनिय एणिछल केवलनाण. रागज राखे रग भरे ॥२४॥ जो अष्टापद सेल वदे चढि चउवीस जिण आतम लद्धि वसेण. चरम सरीरी सो ज मुनि । इय देसणा निसुणेह गोयम गणहर सचरिय. तापस पन्नरसएण तो मुनि दीठों आवतो ए ॥ २५ ॥ तप सोमिय निय अग अम्हा सगति न ऊपजे ए किम चडमे दृढ काय गज जिम दीसे गाजतो ए । गिरुओ ए अभिमान तापस जों मन चितवे ए तो मुनि चढियो वेग आलबवि दिनकर किरण ॥२६॥ कंचण मणि निप्फन्न दडकलस ध्वज-वड सहिय । पेक्खवि परमाणन्द जिणहर भरतेसर महिय । निय निय काय प्रमाण, चिहु दिसी सठिय जिणह बिंब, पणमवि मन उल्लास, गोयम गणहर तिहा वसिय ॥ २७ ॥ वयर सामीनो जीव, तिर्यक जृंभक देव तिहा,प्रतिबोध्या पुडरीक,कडरीक अध्ययन भणी । वलता गोयम सामि; सवि तापस प्रतिवोध करे, लेई

आपण साथ, चाले चिम जूथाधिपति ॥ २८ ॥ खीर खांड घृत आण, अमिय वूठ अंगूठ ठवे, गोयम एकण पात्र, करावे पारणो सवे । पंचसयां शुभ भाव, उज्जल भरियो खीर मिसे, साचा गुरु संयोग, कवल ते केवल रूप हुआ ॥ २९ ॥ पञ्चसयां जिणनाह, समवसरण प्रकारत्रय, पेखवि केवलनाण, उप्पन्नो उज्जोय करे । जाणे जणवि पीयूष, गाजंतो घन मेघ जिम, जिनवाणी निसुणेवि, नाणो हुआ पंचसया ॥ ३० ॥ वस्तु ॥ इण अनुक्रम इण अणुक्रम नाण पन्नरेसें, उप्पन्न परिवरिय, हरिदुरिय जिणनाह वंदइ, जाणेवि जगगुरु वयण, तिहि नाण अप्पाण निंदइ । चरम जिनेसर इम भणे, गोयम म करिस खेव, छेह जाय आपण सही, होस्यां तुल्ला वेव ॥ ३१ ॥ भास ॥ सामियो ए वीर जिणन्द, पूनमचन्द जिम उल्लसिय, बिहरियो ए भरहवासम्मि, वरस वहुत्तर संवसिय । ठवतो ए कणय पउमेण, पाय कमल संघे सहिय, आवियो ए नयणानन्द, नयर पावापुर सुरमहिय ॥ ३२ ॥ पेसियो ए गोयम सामि, देवसमा प्रतिबोध करे, आपणो ए तिसला देवि नंदन पुहतो परमपए । वलतो ए देव आकाश. पेखवि जाण्यो जिण

समे ए. तो मुनि ए. मन विखवाद नाद भेद जिम ऊपनो ए ।। ३३ ।। इण समे ए सामिय देखि आप कनासु टालियो ए जाणतो ए तिहुअण नाह. लोक विवहार न पालियो ए । अतिभलु ए कीधलु सामि जाण्यु केवल मागसे ए चिन्तव्यु ए बालक जेम. अहवा केडे लागसे ए ।। ३४ ।। हू किम ए वीर जिणद भगतिहि भोले भोलव्यो ए. आपणो ए उचलो नेह. नाह न सपइ साचव्यो ए । साचो ए वीतराग, नेह न हेजें लालियो ए, तिण समे ए गोयम चित्त, राग वैरागे वालियो ए ।। ३५ ।। आवतु ए जे उल्लट्ट, रहितु रागे साहिय ए, केवल नाण उप्पन्न, गोयम सहिज ऊमाहियु ए । तिहुअण ए जय जयकार, केवल महिमा सुर करे ए, गणधरु ए करय वखाण, भविया भव जिम निस्तरे ए ।। ३६ ।। वस्त ।। पढम गणहर पढम गणहर वरस पच्चास, गिहवासे सवसिय, तीस वरस सजम विभूसिय, सिरि केवलनाण पुण, वार वरस तिहुअण नमसिय, राजगृही नयरी ठव्यो, वाणवइ वरसाउ, सामी गोयम गुणनिलो, होसे सिवपुर ठाउ ।। ३७ ।। भास ।। जिम सहकारे कोयल टहुके जिम कुसुमावन परिमल

महके. जिम चन्दन सोगंध निधि । जिम गंगाजल लहियाँ लहके. जिम कणयाचल तेजे झलके, तिम गोयम सोभाग निधि ॥ ३८ ॥ जिम मानसरोवर निवसे हंसा. जिम सुरतरु वर कणय वतंसा. जिम महुयर राजीव वनें । जिम रयणायर रयणें विलसे. जिम अंबर तारागण विकसे. तिम गोयम गुरु केवल घनें ॥ ३९ ॥ पूनम निसि जिम ससियर सोहे. सुरतरु महिमा जिम जग मोहे. पूरव दिसि जिम सहसकरो । पञ्चानन जिम गिरिवर राजे. नरवइ घर जिम मयगल गाजे. तिम जिन सासन मुनि पवरो ॥ ४० ॥ जिम गुरु तरुवर सोहे साखा. जिम उत्तम मुख मधुरी भाषा. जिम वन केतकि महमहे ए । जिम भूमिपति भुयबल चमके जिम जिन मन्दिर घंटा रणके, गोयम लब्धे गहगह्यो ए ॥ ४१ ॥ चिन्तामणि कर चढियो आज, सुरतरु सारे बंछिय काज, कामकुम्भ सहु वशि हुआ ए। कामगवी पूरे मन कामी, अष्ट महासिद्धि आवे धामी, सामी गोयम अणुसरि ए ॥ ४२ ॥ पणवक्खर पहिलो पभणीजे, माया बीजो श्रवण सुणीजे, श्रीमती सोभा संभवे ए । देवह धुरि अरिहंत नमीजे, विनयपहु

उवझाय थुणीजे, इण मन्त्रे गोयम नमो ए ।। ४३ ।। परघर वसता काईकरीजे,देस देसातर काई भमीजे,कवण काज आयास करो। प्रह ऊठी गोयम समरीजे, काज समग्गल ततखिण सीजे, नव निधि विलसे तिहा सुघरे ।। ४४ ।। चवदय सय बारोत्तार बरसे, गोयम गणहर केवल दिवसे, कियो कवित्त उपगार परो। आदिहि मगल ए पमणीजे, परव महोच्छव पहिलो दीजे, रिध्दि वृध्दि कल्याण करो ।। ४५ ।। धन माता जिण उयरे धरियो, धन्य पिता जिण कुल अवतरियो, धन्य सुगुरु जिण दीखियो ए। विनयवत विद्या भन्डार, तसु गुण पुहवी न लब्भइ पार, वड जिम साखा विस्तरो ए। गोयम सामी नो रास भणीजे, चउविह सघ रलियायत कीजे, रिद्धि वृद्धि कल्याण करो।। ४६ ।। कुकुम चदन छडा दिवरावो, माणक मोतीना चोक पुरावो, रयण सिहासण बेसणो ए। तिहा बेसो गुरु देसना देसो,भविक जीवना काज सरसी,नित नित मगल उदय करो ।।४७।।

इति श्री गौतमस्वामी रास सम्पूर्ण।

卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐

श्री गौडीपार्श्वजिन वृद्धस्तवनम् ॥

(दूहा) वाणी ब्राह्मावादिनी, जागै जग विख्यात।
पास तणा गुण गावतां, सुज मुझ वसज्यो मात ॥१॥
नारंगै अणहिल्पुरै, अहमदावादै पास। गौडीनो धणी जागतो, सहुनी पूरे आस ॥ २ ॥ शुभ वेला शुभ दिन घड़ी, मुहुरत एक मंडाण। प्रतिमा ते इह पासनी, थई प्रतिष्ठा जाण ॥ ३ ॥ (ढाल)—गुणहि विशाला मंगलीक माला, वामानो सुत साचोजी। धण कण कंचण मणि माणक दे, गौडीनो धणी जाचोजी (गु०) ॥४॥ अणहिलपुर पाटण मांहे प्रतिमा, तुरक तणे घर हुंती जी। अश्वनी भूमि अश्विनी पीडा, अश्वनो वाली विगती जी (गु०) ॥५॥ जागंतो जक्ष जेहनै कहियै, सुहणो तुरकनै आपै जी। पास जिनेसर केरी प्रतिमा, सेवक तुझ संतापै जी. (गु०) ॥६॥ प्रह ऊठीने परगट करजे मेघा गोठीने देजेजी। अधिक म लेजे ओछो म लेजे, टक्का पांचसै लेजे जी (गु०) ॥७॥ नहि आपिस तो मारिस मुरडीस, मोर बंध बंधास्ये जी। पुत्र कलत्र धन हय हाथी तुझ लच्छि घणी घर थास्यैजी (गु०) ॥ ८ ॥

卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐

मारग पहिलो तुझनें मिलस्यै, सारथवाह जे गोठीजी, तिलवट टीलो चोखा चंढया वस्तु वहे तसु पोठी-जी (गु)। ॥ ९ ॥ (दुहा)—मनसुं बीहनो तुरकडो, मानें वचन प्रमाण। बीबीने सुहगा तणो, समलावै सहिनाण ॥१॥ बीवी बोले तुरकने, बडा देव है कोय। अब सताव परगट करो, नहीतर मार सोय ॥११॥ पाछली रात परोडीयें, पहेली बाधं पाज। सुहुणा माहें सेठने, सम-लावै जक्ष-राज ॥ १२ ॥ (ढाल)—एम कही जक्ष आयो राते, सारथवाहने सुहणें जी। पास तणी प्रतिमा तु लेजे, लेतो सिर मत धूणेजो (एम.) ॥ १३ ॥ पाचसैं टका तेहने आपे, अधिको म आविस वारूजो। जतन करी पहुचाडे थानिक, प्रतिमा गुण सभारूजी- (एम.) ॥ १४ ॥ तुझने होसी बहु फल दायक, भाई गोठीने सुणजे जो। पूजीस प्रणमीस तेहना पाया, प्रह उठीने थुणजे जो (ए.) ॥ १५ ॥ सुहणो देईने सुर चाल्यो, आपणे थानक पहुतो जी। पाटण माहे सारथवाहु, ढुंढे तुरकने जोतो जी- (ए) ॥ १६ ॥ तुरकैं जाता दीठो गोठी, चोखा-तिलक लिलाडे-जी। सकेत पहुतो साचो जाणि, बोलावै बहु-लाडे जो (ए.) ॥१७॥

मुझ घरि प्रतिमा तुझनें आपु पास जिणेसर केरी जी
पांचसै टक्का जो मुझ आपै मोल न मांगु फेरी जी
(ए.) ॥१८॥ नाणो देई प्रतिमा लेई, थानक पहुंतो
रंगै जी । केसर चन्दन मृगमद घोली, विधिसुं पूजा
रंगे जी (ए.) ॥१९॥ गादी रुडी रूनी कीधी, ते
मांहि प्रतिमा राखे जी । अनुक्रम आव्या परिकर माहें,
श्रीसंघ नें सुर साखै जी (ए.)॥२०॥ उच्छव दिन
२ अधिका थाये, सत्तार भेद सनात्रो जी । ठाम
ठामना दरसण करवा, आवै लोक प्रभातो जी (ए.)
॥ २१ ॥ (दूहा)—इक दिन देखै अवधिसुं, परिकर
पुरनो भंग । जतन करू प्रतिमा तणो, तीरथ अच्छै
अभंग ॥ २२ ॥ सुहणो आपै सेठने, थल अटवी उजाड
महिमा थास्यै अति घणी. प्रतिमा तिहां पहुंचाड
॥२३॥ कुशल खेम तिहां अच्छे. तुझनें मुझने जाणि ।
संका छोडी काम करि,करतो मकरि संकाणि ॥२४॥
ढाल—पास मनोरथ पूरा करै.वाहण एक वृषभ जोतरै ।
परिकरथी परियाणों करै एक थल चढ़ि बीजो उतरै
॥२५॥ बारै कोस आव्या जेतलै. प्रतिमा नवि चाले
तेतलै । गोठी मनह विमासण थई. पास भुवन मंडावुं

मुझ घरि प्रतिमा तुझने आपु पास जिणेसर केरी जी।
पांचसै टक्का जो मुझ आपै, मोल न मागु फेरी
जी (ए)॥१८॥ नाणो देई प्रतिमा लेई, थानक पहुतो
रगै जी। केसर चन्दन मृगमद घोली, विधिसुं पूजा रंगे
जी (ए)॥१९॥ गादी रुडी रुनी कीधी, ते मांहि प्रतिमा
राखे जी। अनुक्रम आव्या परिकर माहें, श्रीसंघ नें सुर
साखें जी (ए)॥२०॥ उच्छव दिन २ अधिका थाये,
सत्तर भेद सनात्रो जी। ठाम ठामना दरसन करवा,
आवेलोक प्रभातो जी (ए)॥२१॥ (दूहा)-इक दिन
देखे अवधिसु, परिकर पुरनो भग। जतन करु प्रतिमा
तणो, तीरथ अच्छें अभग ॥२२॥ सुहणो आपे सेठने,
बल अठवी उज्जाड। महिमा थास्यें अति घणी, प्रतिमा
तिहा पहुचाड ॥२३॥ कुशल खेम तिहा अछे, तुझने
मुझने जाणि। सका छोडो काम करि, करतो मकांग
सकाणि ॥ २४ ॥ ढाल-पास मनोरथ पूरा करे, वाहण
एक वृषभ जोतरे। परिकरथी परियाणो करे एक बल
चढि बीजो उतरे।२५। बारे कोस आव्या जेतले प्रतिमा
नविचाले तेतले गोठीमनह विमासण थई, पास भुवन मडावु
सही।२६। आ अटवी किमकरू प्रयाण, कटको कोइ न दीसें

प्राहाण । देवल पास जिनेशर तणो, मंडावुं किम गरथ त्रिणो ॥२७॥ जल विन श्रीसंघ रहस्ये किहां,सिलावटो किम आवे इहां। चिन्तातुर थको निद्रा लहे, यक्षराज आवीने कहे ॥२८॥ गहली ऊपर नाणो जिहां, गरथ घणो जाणीजे तिहां । स्वस्तिक सोपारीने ठाणि,पाहण तलो उल्लटस्यें खाणि ॥२९॥ श्रीफल सजल तिहां किल जूओ,अमृत जल नीसरसी कूओ । खारा कूवा तणो इह सेनाण, भूमि पडयो छें नीलो छाग ॥३०॥ सिलावटो सीरोही वसे, कोढ पराभवियो किसमसे । तिहां थकी तुइ हां आणजे,सत्य वचन माहरो मानजे ॥३१॥ गोठीनो मन थिर थापियो, सिलावटने सुहणो दियो। रोग गमीने पूरुं आस, पास तणो मंडे आवास ॥३२॥ सुपन माहे मान्यो ते वैण, हेम वरण देखाडयो नैण । गोठी मनह मनोरथ हुवा,सिलावटने गया तेडवा ॥३३॥ सिलावटो आवै सूरमो, जिमे खीर खांड घृत चूरमो । घडे घाट करै कोरणो, लगन भले पाया रोपणो ॥३४॥ थंम थंम कीधी पुतली, नाटक कौतुक करतो रली । रंग मंडप रलियामणो रसै,जोतां मानवनो मन वसै ॥३५॥नीपायो पूरो प्रासाद, स्वर्ग समो मंडे आवास । दिवस विचारी

इड़ो घड़यो, ततक्षिण देवल ऊपर चढयो ॥३६॥ शुभ लगन शुभ वेला वास, पद्मासण बेठा श्रीपास । महिमा मोटो मेरु समान, एकलमिल वगडे रहवान ॥ ३७ ॥ बात पुराणी में सांभली तवन माहि सुधी साकली । गोठी तणा गोतरिया अच्छे, यात्रा करीने परणे पछे ॥३८॥ (दोहा)—विघन विडारन यक्ष जगि, नेहनो अकल सरूप । प्रीत करे श्री सघने, देखाड़े निज रूप ॥३९॥ गिरुओ गोडी पास जिन आपे अरथ भडार सानिध करै श्रीसघने, आसा पूरणहार ॥४०॥ नील पलाणे नीरु हय नीलोथई असवार । मारग चूका मानवी, वाट दिखावण हार ॥४१॥ (ढाल)—वरण अढार तणो लहै भोग, निघन निवारे टाले रोग । पवित्र थई समरे जे जाप, टाले सगला पाप संताप ॥४२॥ निरधनने घरि धननो सूत, आपे अपुत्रीयाने पूत । कायरने सूरापन धरै, पार उतारे लच्छी वरै ॥४३॥ दोभागीने दे सोभाग, पग विहूण ने आपे पग । ठाम नहीं तेहने द्यै ठाममनवाछित पूरे अभि- राम ॥४४॥ निराधार ने द्यै आधार, भयसायर उतारे पार । आरतियानी आरत भंग, धरे ध्यान ते लहै सुरग ॥४५॥ समर्था सहाय सीयै प्रक्षराज, तेहना मोटा अछै दिवाज । बुद्धिहीणने बुद्धि प्रकाश, गूगाने दे वचन विलास ॥४६॥ दुखियाने सुखनो दातार, भय भजण रजण अव-

तार। बंधन तूटे बेडी तणा, श्री पार्श्व नाम अक्षर स्मरण ॥४७॥ (दूहा)-श्री पार्श्वनाम अक्षर जपे, विश्वानर विकराल। हस्ति जूथ दूरे टलें, दुद्धर सिंह सियाल ॥४८॥ चोर तणा भय चूकवे, विष अमृत उडकार। विषधरनो विष ऊतरे, संग्रामे जय जय कार ॥ ३९ ॥ रोग सोग दालिद्र दुख, दोहग दूर पलाय। परमेसर श्री पासनो, महिमा मन्त्र जपाय ॥५०॥ कडखानी चाल)-उंजितु उंजितु उंज उपसम धरी, ॐ ह्रीं श्रीं श्रीपार्श्व अक्षर जपंते। भूत ने प्रेत झोटिंग व्यंतर सुरा, उपसमे वार इकवीस गुणंते (उं.) ॥५१॥ दुद्धरा रोग सोगा जरा जंतने. ताव. एकान्तरा दुत्तपंते गर्भवन्धन व्रणं सर्प विच्छू विषं. चालिका बालमेवा झखंते (उं.) ।५२। साइणी डाइणी रोहणी रंकणी. फोटका मोटका दोष हूंते। वाढ उंदरतणी कोल नोला तणी. स्वान सीयाल विकराल दंते (उं.) ५३ धरणेंद्र पद्मावती समर शोभावती. वाट आघाट अटवी अटंते। लखमी लीला मिले सुजस वेलाउलें. सयल आस्या फलै मन हसंते (उं.) ॥५४॥ अष्ट महाभय हरे कानपीड़ा टलैं. ऊतरैं सूल ओसग भणंते। वदत वर प्रीतसुं प्रीतिविमल प्रभू. श्री पास जिण नाम अभिराम मन्ते (उंजितु) ॥५५॥ इति श्रीगोडी पार्श्वनाथजी वृद्ध स्तवनं समाप्तम्।

महाप्रभाविक श्री उवसग्गहरं स्तोत्रम

उवसग्गहर पास पासं वदामि कम्मघण मुक्क ।
विसहरविस निन्नास मगल कल्लाण आवास ॥ १ ॥
विसहरफुलिंगमंत कंठे धारेई जो सया मणुओ ।
तस्सगह रोग मारि दुठ्ठ जरा जंति उवसाम ॥ २ ॥
चिठ्ठउ दूरे मतो तुज्झ पणामोवि बहुफलो होइ ।
नरतिरीए सुवि जीवा पावंति न दुक्खदोगच्च ॥ ३ ॥
ॐ अमरतरु कामधेणु, चिंतामणि कामकुभ माइआ ।
सिरि पास नाह सेवा, गहाण सव्वेवि दासत्ताम ॥ ४ ॥
ॐ ह्रीं श्रीं एं तुह दसणेण सामिय,
पणसेई रोग सोग दुक्ख दोहग्ग ।
कप्पतरू मिवजायइ ॐ तुह दसणेण सव्वफलहेउ स्वाहा ५
ॐ ह्रीं नमिउण विग्घ नासय मायाबीएण धरण नागिंद ।
सिरि कामराज कलीं पास जिणद नमंसामि ॥६॥ ॐ
ॐ ह्रीं श्रीं सिरिपास विसहर विज्जामतेण झाण झाएज्झा
धरण पउमावई देवी ॐ ह्रीं क्ष्म्ल्व्र्यूं स्वाहा ॥ ७ ॥
ॐ जयउ धरणिंद पउमावईय नागिणी विज्ज ।
विमल झाण सहियो ॐ ह्रीं क्ष्म्ल्व्र्यूं स्वाहा ॥८॥
ॐ थुणामि पासनाह, ॐ ह्रीं पणमामि परम भत्तीए ।
अट्ठक्खर धरणेन्दो, पउमावई पयडिया कित्ती ॥ ९ ॥

जस्स पयकमल मज्झे,सया वसेई पउमावइय धरणिंदो ।
तस्स नामइ सयलं, विस हरविसं नासेइ ॥ १० ॥
तुह सम्मत्ते लद्धे चिंतामणी कप्प पावब्भहिए ।
पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ११ ॥
ॐ नठ्ठठ्ठ-मयठाणे पणट्ठ कमठ्ठ नठ्ठ संसारे ।
परमठ्ठ निठ्ठि अठ्ठे अट्ठ गुणा धिसरं वंदे ॥ १२ ॥
ॐ गरुडो वनिता पुत्रो नागलक्ष्मीं महाबल ।
तेण मुच्चंति मुसा तेण मुच्चंति पन्नगा ॥ १३ ॥
सतुहनाम सुद्धमंतं सम्मं जो जवेई सुद्ध भावेण ।
सो अयरामरं ठाणं, पावई नय दोग्गंई दुख्खंवा ॥१४॥
ॐ पंडु भगंदर दाहं कासं सासं चसूलमाइणि ।
पास पहु प भावेण नासंति सयल रोगाइं ह्रीं स्वाहा ।१५।
ॐ विसहर दावानल-साइणि वैयाल-मारि आयंका ।
सिरि निलकंठ पासस्स स्मरण मित्तेण नासंति ।।१६ ।।
पन्नासं गोपोडां कुरग्रह-तुह दंसणं भयंकाये ।
आवि न हुंति ए तहवि,तिसज्जं जं गुणिज्जासो ।।१७।।
पींड जंत भगंदर खास, सासशूल तह निव्वाह ।
सिरि सामलपास महंत नाम पउर पउलेण ।। १८ ।।
ॐ ह्रीं श्रीं पासधरण संज्जुत्तं विसहरविज्जं जवइ सुद्धमणेणं

पावइ इच्छिय सुह, ॐ ह्रीं श्रीं क्ष्म्ल्व्र्यूं स्वाहा ॥१९॥
ॐ रोग जल जलण विसहर चोरारि मइंद गयरण भयाइं।
पास जिणनाम संकित्तणेण,पसमति सव्वाइं ह्रीं स्वाहा२०
ॐ जयउ धरणिंद नमंसिय पउमावई पमुह निसेविय पाया।
ॐ क्लीं ह्रीं महा सिद्धि,करेइ पास जग नाहो ॥२१॥
ॐ ह्रीं श्रीं त नम पास नाह,
ॐ ह्रीं श्रीं धरणेन्द्र नमंसिय दुहविणासं।
ॐ ह्रीं श्रीं जस्स पभावेण सया,
ॐ ह्रीं श्रीं नासंति उवद्दवा बहवे ॥ २२ ॥
ॐ ह्रीं श्रीं पइसमरताण मणे।
ॐ ह्रीं श्रीं न होई वाहि न त महादुक्ख।
ॐ ह्रीं श्रीं नामपि हि मत सम,
ॐ ह्रीं श्रीं पयड नत्थीत्थ संदेहो ॥२३॥
ॐ ह्रीं श्रीं जल जलण भयतह सप्पसिंह,
ॐ ह्रीं श्रीं चोरारि स भवे खिप्प।
ॐ ह्रीं श्रीं समरेई पास पहु।
ॐ श्रीं क्लीं पुहविकयावि कितस्स ॥२४॥
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रीं इह लोगट्ठीपरलोगट्ठी
ॐ ह्रीं श्रीं जो समरेइ पास नाह।
ॐ ह्रां ह्रीं ह्रं ह्रूं गां गीं गु गें.।

तं तह सिज्झइ खिप्पं ॥२५॥
इह नाह समरह भगवंत, ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ग्रां ग्रीं
ग्रुं ग्रें क्लीं क्लीं श्रीं कलिकुंड स्वामिने नमः ॥२६॥
इय संथुओ महायस! भत्ति ब्भर-निब्भरेण हियएण।
तादेव दिज्ज बोहिं भवे २ पास जिणचंद ॥२७॥
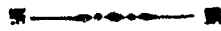
॥ अथ आत्मरक्षास्तोत्रं ॥

ॐ परमेष्ठी नमस्कारं सारं नवपदात्मकं। आत्मरक्षाकरं वज्रपिंजराभं स्मराम्यहम् ॥१॥ ॐनमो अरिहंताणं शिरस्कं शिरसिस्थितम्। ॐ नमो सव्वसिद्धाणं मुखे मुखपटंवरम्।२। ॐनमो आयरियाणं अंगरक्षातिशायिनी। ॐनमो उवज्झायाणं आयुधं हस्तयोर्दृढं ॥३॥ ॐ नमो सव्वसाहूणं मोचके पादयोःशुभे। एसो पंच नमोक्कारो शिलावज्रमयीतले ॥४॥ सव्वपावप्पणासणो वप्रोवज्रमयीवही। मंगलाणं च सव्वेसिं खादिरांगारखातिका ॥५॥ स्वाहांतं च पदं ज्ञेयं पढमं हवइ मंगलम्। वप्रोपरि वज्रमयं पिधानं देहरक्षणे ॥६॥ महाप्रभावारक्षेयं क्षुद्रोपद्रवनाशिनी। परमेष्ठिपदोद्भूता कथिता पूर्वसूरिभिः ॥७॥ यश्चैवं कुरुते रक्षां परमेष्ठिपदैः सदा। तस्य न स्याद्भय व्याधिराधिश्चापि कदाचन ॥८॥

इति आत्मरक्षास्तोत्रं समाप्तं ॥

॥ यन्त्रलेखनगन्ध ॥

यत्र अष्ट गंध से, पचगंध से, और यक्षकर्दम से लिखे जाते है, और कलम के लिए भी अलग विधान है, अनार की, चमेली की, और सोने की कलम से लिखना बताया गया सो यन्त्र के बयान में जिस प्रकार की कलम या गध का नाम आवे वैसी तैयारी कर लेना चाहिए। लिखते समय कलम टूट जाय तो यत्र मे लाभ नहीं हो सकेगा और लिखते समय गधादि भी कम न हो जाय जिसका उपयोग पहले ही कर लेना चाहिए।

अष्ट गंध में (१)अगर (२)तगर (३)गोरोचन (४) कस्तूरी (५) चन्दन (६) सिन्दूर (७) लाल चन्दन और (८) केशर इन सबको एक खरल में घोट कर तैयार कर लेना और लिखने की स्याही जैसा रस बना लेना।

अष्ट गध का दूसरा विधान (१)कपूर (२)कस्तूरी (३) केशर (४) गोरोचन (५) सधरफ (६) चन्दन (७)अगर और (८) गेहुँला, इस तरह आठ वस्तु का बनता है।

अष्ट गंध का तीसरा विधान (१) केशर (२) कस्तूरी (३) कपूर (४) हिंगलु (५) चन्दन (६) लाल चन्दन (७) अगर, (८) तगर लेकर घोट कर तैयार कर लेना।

पंच गंध का विधान, केशर, कस्तूरी, कपूर, चन्दन, गोरोचन, इन पांच वस्तु का मिश्राण कर रस बना लेना।

यक्ष कर्दम का विधान १ चन्दन २ केशर ३ कपूर ४ अगर ५ कस्तूरी ६ गोरोचन ७ हिंगलु ८ रतांजणी ९ अम्बर १० सोने का वर्क ११ मिरचकंकोभु, इन सबको लेकर स्याही जैसा रस बना लेवें।

ऊपर बताए अनुसार स्याही जैसा रस तैयार कर पवित्र कटोरी या अन्य किसी स्वच्छ पात्र में लेना, खयाल रखिये कि जिसमें भोजन किया हो अथवा पानी पीया हो तो वह कटोरी काम में नहीं आ सकेगी स्याही यदि तात्कालीक न बनाई हो और पहले बनाकर सुखाकर रखी हो तो उसे काम में ले सकते हैं सब तरह के गंध या स्याही की तैयारी में गुलाब जल कमा में लेना चाहिए, और अनार की या चमेली की कलम

ऐकी अँगुल से याने ग्यारह, तेरह अँगुल लम्बी होना चाहिए और याद रखिये कि ग्यारह अगुल से कम लेना मना है, सोने का निब हो तो वह भी नया होना चाहिये जिससे पहले कभी न लिखा गया हो, जिस होल्डर में निब डाला जाय उसमें लोहे का कोई अश न होना चाहिये, इस तरह की तैयारी व्यवस्थित रूप से की जाय ।

भोजपत्र स्वच्छ हो, दाग रहित हो, फटा हुआ न हो, वैसा स्वच्छ देखकर लेना और यन्त्र जितना बडा लिखना हो उससे एक अंगुल अधिक लम्बा चौडा लेना चाहिये, भोजपत्र न मिल सके तो अभाव में आवश्यकता पूरी करने को कागज भी काम में ले सकते हैं ।

।। सुवण सिद्धि कल्प ।।

वर्तमान काल में कई बार सुना गया है कि सुवर्ण सिध्द का प्रलोभन देकर घर का जेवर आभूषण या सोना मंगवा कर उसका दुगना कर देने की लालच देकर भोले जीवों को ठग जाते हैं और कईबार समझदार चतुर भी ऐसे फंदे में आ जाते हैं। और घर का धन खो बैठते हैं। हां ऐसे प्रयोग कई तरह के होते हैं जो पूर्व पुन्योदय से सिध्द होते हैं, अतः लोभ में आकर ठगो की ठग विद्या से सावधान रहना चाहिये।

सुवर्ण सिद्धि कल्प में से एक प्रयोग का वर्णन किया जाता है जिसको करने से पहले गुरुगम प्राप्त करना चाहिये।

प्रयोग करते समय पारा, लोहे का बुरादा, तांबे का बुरादा, और सफेद संख्या वजन में बराबर लेकर आकके दूध में सबको एक साथ खरल करना, करते करते बारीक पीसते लुगदी तैयार हो जायगी जब लुगदी बन जाय तब अलग रख, मिट्टी का दीया लेकर उसमें एक तोला सुहागा पीसकर रख देना और उसके उपर लुगदी रखना। फिर एक तोला सुहागा लुगदी के उपर

रखदेना और उपर दूसरा दीवा ढक देना, दोनो दिये पहले मे घिसकर तैयार रखना चाहिये जिस से दोनो को मिलाते समय सधि मे छेद न रहने पाये जब दिये तैयार होजाय तो एक दिये पर दूसरा दिया रख मजबूत तावे के तार से बाधदो,सधि पर कपडे की चौंधी मुलतानी मिट्टी में भिगोकर लपेट दो उपर से फिर दो चौंधी लगा मुलतानी मिट्टी से आच्छादित करलो और खूब मसल कर इस तरह बनालो कि वायुका सचार नहीं हो सके,इस तैयार होने बाद लेख तो है कि पच्चीस कडे लगाना लेकिन कितने लगाना यह निजकी बुध्दि उपर आधार रखता हे । जब कडे आधे से कम जल जाय तब मध्य में कपडमिट्टी वाले दिये को रख देना और बारह घटे तक अन्दर रखना बाद में बाहर निकालना और धीरे धीरे खोलना, मात्रा तैयार हुई होगी तो वह एक तोले शुध्द तामरस में एक रती मात्रा काम देगी । उपर के विधान म पारा आदि कितना लेना यह लिखा नहीं है किन्तु अनुमान से सब मिलाकर एक तोला वजन लेना चाहिए इस तरह से यह प्रयोग जैसा प्राप्त हुवा है वैसा ही प्रकाशित कराया जाता

है, सिध्द होना न होना नसीब पर आधार रखता है सुवर्ण पोरसे आदिकी सिध्दी का वर्णन शास्त्रों में श्रो पालजी के चरित्र में आया है उसे सुनते हुए यह तो मानना पड़ेगा कि सुवर्ण सिध्दी है जरूर परन्तु प्राप्त होना भाग्याधीन है, धर्म नीति पर दृढ रहना इष्टदेव के स्मरण को नहीं भूलना।

उपर बताये हुए प्रयोग में एक पुस्तक में ऐसा भी देखा गया है कि संख्या पीले रंग का चाहिए इस बात का खुलासा ठीक तरह से तो इस विद्या के निष्णात द्वारा ही प्राप्त हो सकता है।

सुनहरी रूपहली स्याही:-

सोना और चांदी की स्याही बनाने के लिए वर्क को खरल में डाल कर धव के गूंद के स्वच्छ जल के साथ खूब घोटते जाना चाहिए। बारीक चूर्ण हो जाने पर मिश्री का पानी डाल कर खूब हिलाना चाहिए। स्वर्ण चूर्ण नीचे बैठ जाने से पानी को धीरे-धीरे निकाल देना चाहिए। तीन चार बार धुलाई पर गूंद निकल जाएगा और सुनहरी या रूपहली स्याही तैयार हो जाएगी।

चित्रकला के रंग

सचित्र पुस्तक लेखन में चित्र बनाने के लिए ऊपर लिखित काले, लाल, सुनहरे, रूपहले रंगो के अतिरिक्त हरताल और सफेदा का भी उपयोग होता था। दूसरे रगो के लिए भी विधि है। हरताल और हिंगुल मिलाने पर नारगी रग; और हिंगुल और सफेदा मिलाने से गुलाबी रग, हरताल और काली स्याही मिल कर नीला रंग बनता था।

(१) सफेदा ४ टाक व पेवडी १ टाक व सिंदूर १॥ टाक से गौर वर्ण।

(२) सिंदूर ४टाक व पोथी गली१ टाक से खारिक रग।

(३) हरताल १ टाक व गली आधा टाक से नीला रंग।

४) सफेदा १ टाक व अलता आधा टाक से गुलाबी रग।

(५) सफेदा १ टाक व गली १ टाक से आसमानी रग।

६ सिंदूर १टाक व पवडी आधाटाक से नारंगी रंग होता है।

हस्तलिखित ग्रन्थ पर, चित्र बनाने के लिए इन रगो के साथ गोंद का स्वच्छ जल मिलाया जाता है। इसके अतिरिक्त विभिन्न चित्रकला के योग्य रगो के निर्माण की विधि के पचासों प्रयोग पुराने पत्रों मे लिखे पाये जाते हैं।

घंटाकर्ण देव अराघनार्थं

मूल मंत्र

ॐ ह्राँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ ब्लुँ द्राँ
द्रीँ आँ क्रौँ ह्रीँ घंटाकर्ण भद्र-
माणीभद्रे ठः ठः ठः स्वाहा ॥

दूसरा मंत्र

ॐ आँ क्राँ ह्रीँ क्लीँ ब्लूँ ऐँ
श्रीँ घंटाकर्ण महावीर भद्रमाणि-
भद्रे ॐ ह्रीँ घंटाकर्ण नमोस्तुते
ठः ठः ठः स्वाहाः ॥